॥ ई ॥ ॐ नमः सिद्धं ॥ श्रीवीतरागाय नमः
॥ १ ॥ अथ पद पंकति लिख्यते ॥ श्रीसंमे
दाचल के निरखत अंगैं घन मेरे भाजि गये ॥ रोम
रोम हरषे लन नम लके मेंन वंछित सुख पाइ लये
श्रीसंमे ॥ टेक ॥ जा आकर जिनेस जन
न कौं वहु भवि जण वसुद विलये ॥ अघेव
नाय व दाय भगति चित धरि ठ्छा हगिगी निक
टगये ॥ श्री ॥ १ ॥ नीचे राजके दरस परसतें स
कल अमंगल दूरि भये ॥ नरनारी सुंदर सु भेष
स जिंग वैं मंगल नये नये ॥ श्रीसं ॥ २ ॥ ऐक
न भन वडिक वंधे मान वहिरे कांद रहि गिरि

॥ प० १ ॥ जिनैइकैंनिर्मलगुणगनगावतनरनारीशुवच
॥ २ ॥ णमैं ॥ आन ० ॥ ५ ॥ कैंयकभविमंडलमा
डीतिअतिहर्षैवंदावतहैं जिनमैंनैमननैं
रचौहैंपाठ्यहीचौबीसीकौस्तुस्यहंतजि
णराजभवरणमैं ॥ ३ ॥ आन ० कैंयकमु
नस्वाध्यायकरतनिनमगणरहतभवि
संबोधनमैं ॥ कयैंकभविचरचामुखजंपौत
ऊहापोहकरतनतत्त्वनिमैं ॥ आन ० ॥ ४ ॥ कैं
यकभविपदहिरलांहैंकरिगुनिपुनिम्भी
गिरवरवंदनमैं ॥ इत्यादिकशुभकाज
साजकरिलगेरहतअघकौदलनमैं

डी

दसलंये धंन्निभागधणिदिवसधीदिं
धनिआजजन्ममोसुफलनयों ॥ आ०
॥ २ ॥ वीसटोंकतैं विंसपंतिजिणआरवहुसु
निविधिहारिमोक्षिगये ॥ तिनिकमरज्ञति केवरन
माणिकमनवचतनकरिसीसनयें ॥ आ० ॥
४ ॥ इति: ॥ पदकुमरीतथांजझोटी ॥ ॥ आनंद०
आजुभयौमधवरांमझांवमैनहीजात
कह्यांमैं ॥ आन० ॥ टेक ॥ श्रीसम्मेदसिखि
रितीरथवरवंदिलीयोयुतवहुभविजणमैं
आनंद० ॥ १ ॥ रथजात्राकोभयौमहोत्स
वमाघसुकलअष्टमिसुभदिनमैं ॥ आ

॥पद०॥ मकीचनिशांनी ॥ मोहमहागिरिचूरकर
॥३॥ नैहैं रतनत्रयसुधपंथदिखानी ॥ जिन०
॥ ३ ॥ सुनरसुनिरवगादिपंसीजहांरम
नहिचितजसंस्तानी ॥ मागिकथित
निमिंतम्रमानकरि ॥ फिरिनहींमति
नहोयभविप्रारी ॥ जिनव०॥ ४ ॥ इति:

अ:॥ निरग्रंथजतीमनभावैं ॥ कुगुरादि
कनाहिसुहावैं ॥ निरग्रं० टेक ॥ वीतराग
विज्ञानंभावमयशिवमारगदरसावैं
निर०॥ १ ॥ रतनत्रयभूषगाजुनसोहतनिज
अनुभूतिरमावैं निर०॥ २ ॥ विनुकारगाजग

ध्यान ॥४॥ धनि धनि सुद्ध पंथ जिणवर कौ
या विनु मुक्ति नहीं त्रिभुवन मैं ॥ तातैं याह तजैं
मानिक मन कौं लष्यौ रहै जिनराज पद निमैं
ध्यान द ॥५॥ इति: ॥ ठुमरी ॥ जिनवर स्वर
ग भक्ति वरगंगा ॥ नाहि भजौ भवि नितसु
खदानी ॥ जिनव० टेक ॥ स्यादवाद हिंमगि
तैं रितैं पजी मोह महासागर हिरमानी ॥ जि
नव० ॥१॥ ज्ञान विराग रूपैं दाऐ संजम भा
व मगर हित दांनी ॥ धर्मध्यान जहां भंमर प
रत हैं जामैं सदां साति रसपानी ॥ जिनव० ॥२॥
जिणसं स्तवन तरंग उठति हैं जहां नहीं भ्र

पद६०॥
४॥

लीआयौपायौवृखसुखकार॥जग०॥२
कुगुरुकुदेवकुधर्मआदिसवजान्यौमि
थ्याचार॥धौलीकेपरनापतजेहमजैना
भासलवार॥जगत०॥३॥आपापरकौं
भेदपिछान्यौंभान्यौंचितभ्रमभार॥मा
रगिकजयवंतौंनितधौलीशिवमारग
दातार॥जगत०॥४॥इति:पुनसजोरी:॥
चेतनियहबुधिकौंनसयानी॥जिणमतरी
तिविधजेयमानी॥चे०टेक॥मूलसिहौमि
तकुलाचारमैंहितअनहितकीपरखन
जानी॥कुगुरादिककेपखिसिपातकरिम्भव

वंधु जगोत्तम हित तुं पदेस्या सुनीवें ॥ निरखं०
॥ ३ ॥ चित विभाव अनाताप हरण कौं ज्ञा
नांमृत अरस्यावैं ॥ निरखं० ॥ ४ ॥ कर्मेज नि
त अनाचार त्यागि कैं परमातम कौं ध्यावैं ॥
निरखं० ॥ ५ ॥ मानिक भवि सन तुरुस चंद्र
न वि अनाकुलतताप वुझावैं ॥ निरखं० ६
इति ॥ पुनः राग धीमा तितालौ ॥ जगत
मैं संम्यक सैली सार ॥ जगत० टेक ॥ नीं
कि लीमो हि वडे भ्याग पैतैं दर्शन मोहं निवा
र जगत० ॥ १ ॥ दुर्लभ नर भव पायन हीं कु
मि त्यौं कुगुरु व्योहार ॥ सो कुसंग तजि वौं ॥

॥पह७॥ पीडुहहठीकपटीसठभृष्टलोभमदक
॥५॥ रिअभिमानीतिनिसौंनेहहैवधर्मिनि
सौंयहदुरबुद्धिमहांदुखधांनी॥चेतनि॰
॥५॥सम्नसेरधनखरचकचनमुनिवो
हौतकरतहैंआनाकांनीविसमयखेत
कुगुरनिकेहेतधनखरचिदेतनिमिप
वसपांनी॥चे०६॥जिनमतमाहिसवे
आगममैंरागदोषभ्रमनासकरानी॥
खोलिहिंदयदृगसवपरपरषअवछाड
हुसिथलाचारकहांनी॥चेतनि०७
फिरियहजोगकठिनमिलनैकौंताते

नसुनीनहिंश्रीजिनवानिं ॥ चेतनि॰ १ ॥
वीतरागसरवज्ञदेवछविकोवहुथासरा
गविधिठानी ॥ अरुकुदेवसेन्नपातोहि
कतिन्हैंभजतसठनिपटअज्ञानी ॥ चे॰
॥ २ ॥ तीनिलिंगविनुऔरनजिनमतमा
हिनश्रीजिनवरवखानी ॥ कौंखतीति
सेवतकुगुरनिकौंश्रीजिनअज्ञाभंग
करानी ॥ चेतनि॰ ॥ ३ ॥ मोहक्षोभविनु
धर्मकस्यौंनिजताकौतैनेंसुधिविस
रानी ॥ पुंन्यकर्मउतपत्तिहेतमैंकरीअ
नीतिमहादुखदानी ॥ चेतनि॰ ॥ ४ ॥ पा

॥पद६०॥ यौं॥ केंअरोगताकेंसुभोगताइनिफलमां
॥८॥ हिलुभ्यायौं॥ वृथाविकलपउपजायौ
जिनम०॥ लो॥ देवधर्मगुरुपरखिशा
स्त्रतत्वारथसुचिन्यायौं॥ श्रीलीसुद्ध
सेयअवमानिकज्यौंसुखहोयसवायौं
सद्दासमरससरसायौं॥ जिन०॥ १७॥ इ
ति:॥ दादरौ॥ यहदेखौजगजीवनिकैंसु
लटपरी॥ यह०॥ टेक॥ गाडुरिवतूखवाहि
जिमिपड़ते॥ हितअनहितसुधिबुधिवि
सरी॥ यह०॥ १॥ हांडीपरखिगहैंदमरीकी
बिनुपरखैंजाइकसरिपरी॥ परमारथ

कथनसुनि अंग अंगहरषायौ ॥ भोजनभूत
नखसुनि विलखैं ताकौं कलहबनायौ ति
मिर मिथ्यादृग छायौ ॥ जिनमं० ६ ॥ मा
नव ढावनकुं जिनप्रतिमा थापी जिनभ
वनकरायौ ॥ नाम हि पद्मावति भैरवधी
नेलसिंदूर चढायौ ॥ वहुतसंसार वढायै
॥ जिनमं० ॥ ७ ॥ तपे रागादि जज्ञोपवीत
तिलकादिकु भेष बनायौ ॥ अन्यमती
साइसकिरीआ करिमनमैं नाहि लजा
यौ ॥ कहै जिन आज्ञा गायौ ॥ जिनं० ८ ॥
कैं धन होयकै वैरी विनसैं कैं परिवार वढ

ड्डि२

पद॰१ ॥८॥ थम्राइहोयुगानकेवसेरा॥जीव॰१॥२॥हि
रेंचंदु आदिकसवभएहैंकालनकेचेरा॥क
हुनोकौराखैकैसें॥तिनिकोनौंपरमवडेरा
जीव॰॥३॥नैंउपच्यारपंचपदइसरनैंगहि
लैंअवमननमेरा॥नीयतआपुकौसरनैंग
हिमागिंकज्योंहोवेंमुरझेरा॥जीव॰॥३॥

रागवालाजोगीको डिति:॥तिनालैंः॥तेजगमांहि अपंडि
तजानौं॥जिनिनैंहितअनहितनपिछा
नौं॥टेक॥भूलिरहेनितसहअघमैंव
स्कंस्वरूपनहीसरधानौं॥तेजग॰॥१॥वि
षयकषायभाववाढतमुखकाढतक

हितदेवधर्मगुरुपरखतनहींउसमतिविगडि
यहहै॥२॥अनरथदंडरूपकारिजकील
गीरहितिनितलगनिखरी॥जोजनचूत
सात्मसामायकचितसरधांनहींनेंकध
री॥यह॥३॥संतगुरुंसीखगहतनहिसठहठपु
कडतजिमिहाडिलनकरी॥मानिकस्वपर
परखितजेहुरमति॥अजिजिनवृषतेरीसुफल
घरी॥यह॥४॥इति॥पुनहोरी॥अमर्त्रां
निकेठजवघेरा॥जीवतवकोइीनहींरखक
तेरा॥टेक॥सवकुटंवस्वारथकौसाथी॥
भीरपैरेनहीनेरा॥तेनिकेहितकरतअ

॥पद०॥
॥ली॥

श्रावकसुद्धमुनिभयेसुद्धजिनभावसुद्धलेदिक
रसत्याजैंनौं॥ तेजग०॥१॥ हितमितवचनउचरत
मुखतेंमानौंपरमानंदझरतउरबरषा गं॥ नि
ससंदेहभ्रसौंनरकहितेताकीभवि महा
घबुझानौं॥ तेजग०॥२॥ जिणथिरहांतनि
केममीतडरसाधर्मिनिलखिम्रतिहरखा
नौं॥ चिंतवभावनामाहिरहतनितजिनि
कैमिथ्याभावपलानौं॥ तेजग०॥३॥ ख्या
तिलाभपूजादिचाहतिहीं॥ जिनिकैंना
त्यादिकमदभानौं॥ करिथिरअंगतिनकौं
श्रवमारगकज्यौंचाहतहौंशिवपुरथा
निजनकदानौ

केसवबअसुहानैं रटतकागवत्विद्धं
तनिकौंसज्जनवंचनकौंमुठिकानैं ते
जगमैं ॥२॥ ख्यातिलाभपूजादिचाहयित
पंडितपनौंअपुमहिमानैं ॥ साधर्मीनिसें
करतद्वेषनितअविनयकौंसधौंहैंवे
नैं ॥ तेजगमैं ॥३॥ तिनिकौंविषवत्साम्य
होततिनिदुर्गतिमारगकौंयेहैंपयानैं
मानिकयेलहिसिगलठाणितिनिकौंतज
दुःसंगसदांमतिवानैं ॥ तेजगमैं ॥४॥ इ
ति ॥ पुनः ॥ तेजगमैंसतपंडितजानौं ॥ जि
निनिजपरहितअहितपिछानैं ॥ ते० टेक

॥पद१॥ चाकूं धर्मे आनि धनदान पुंन्य ठैहेरायौ

६ लंपनकूं तपवासठानि कैं वस्त्र लपन

नखायौं ॥ च्या तन कष्ट करायौं ॥ जिन

१॥२॥ जिनग्रह माहि मौमकी वातीक

रितसव मन भायौं ॥ सचित वस्त सजि

निर्वाश्री जिन भजि पाप पंथ मै धायौं

कहा भयौ जैं नी कहायौं ॥ जिन १३ ॥

श्री जिनेंद्र की माल नाम कथि विहु मो

ल करायौं ॥ केवल ज्ञान नछ वीताकूं पं

चामृत न्हमन करायौं ॥ कहैं ग्या जैं न्मै व

धायौं ॥ जिन १ ॥ पूरन अंग गारज्ञा दिह्य

पुरुषारथकौ आली ॥ सब विकलप तजि स्वगुरु सीख मन जिमानि कयहहित हेत निज्ञानी ॥ चेतनि० ॥ इति: ॥ ५८
राग होरी दीपचंदी: ॥ जिनवत तिनिक्ष जह नयायो ॥ जिनहैं कुगुरनि वैहैं कायो ॥ जिन० ॥ टेक ॥ नरभव वसुपल सुकुलजिन वृषलह हिवै विपरीतिगहायो हिताहित ज्ञान न ध्यायो ॥ जिन० ॥ १ ॥ निर्विकार जिन चंद छवीकें वंदनलें लिपटायो ॥ परिग्रहधा रिनिकों गुरु मानें ॥ तिनिहीकौं नमनि करयो ॥ कहैं हम भावन भायो ॥ जिन० ॥ २ ॥ कुल

॥पद८४॥ मानिकक्योंनहोंइभवपार॥जीव०॥२॥इति
॥१२॥ ॥रागआसावरी॥ आकुलरहितहोयइमि
निशिदिनकीजेंतत्वविचाराहो॥आकु०
टेक॥कोमेंकहारूपहैंमेरैंपरहैकोंनअपा
राहो॥आ०॥१॥कोभवकारणबंधकहाकौ
आस्रवरोकनहाराहो॥खिरतकर्मबंधनका
हेतैंआस्यांनककौंनहमाराहो॥आ०॥२॥
इम[illegible]यासाकीयैंपावतहैंपरमानंदअपा
राहो॥भागचंदयहसारजानिकैंकीजेंवा
रंवाराहो॥आकु०॥३॥इति॥पुनः॥बुधि
रचितनकरिआहिनिशिनेमयकीजेंऐकवि

वनहोवैं मानिक जे सधोन धरत तिनिकौं भ
विसेंधु तरावैं ॥ जिनश्रा० ४ ॥ इतिः ॥ दीपचं
दी होरी ॥ जीव लखि यह संसार असार ॥ जा
मैं सुख नांहि लगार ॥ जीव० टेक ॥ द्रव्य क्षेत्र
अरु काल भाव भव रूप पंच परकार ॥ ताम
धि भ्रमत अनादि काल तैं मिथ्या भाव
पसार ॥ जीव० ॥ १ ॥ महा कठिन करि वडे भा
ग्य तैं आयौं जगत किनारा ॥ चूकैं तौ फिरि
नाहि ठिकाना ॥ विषम चतुर्गति धारा ॥ जी
व० ॥ २ ॥ देव धर्म गुरु रूप परखि तजि मोह
[illegible]कार ॥ रत्नत्रय नवका चढि ॥

॥पद८०॥ ना॥अब०॥४॥हितअरुअहितसुतिनिके
॥३२॥ कारणजानि ल्यरेसुभ्रदेना॥तिनिकेजान
नसरधाणंगतजगजीवभ्रमैंना॥हम०
॥२॥कुगुरसुगुरवचविनुपहियानैमि
थ्याभावमिटेना॥मांणिकसुगुरसीष
नवकाचढिक्योंकरिजीवतरैंना॥ह
मसुनैं०॥३॥इति॥पद१६जूरी॥शिव
रमणींजाइडारी॥वैरागभयोप्रभुम्हारो
शिव०॥टेक॥तोरणतेरथफेरिदीयौप्र
भुपसूफंदनिरवारो॥शि०॥१॥अध्रुवा
दिभावनभावत॥लौकांतिकसुजस

याराहों॥सु०॥२॥टेक॥मैं चितज्ञारारूपहै मेरौं
परश्रुजीवनिरधाराहो॥सुचि०॥१॥भ्रमभ
वकारनदुःखवंअनसन संवरहैसुखकार
हो॥चिह विभावताजरनरीजे राह्शिवरू
रूपहमाराहो॥सु०॥२॥धनिथनिजानजिणि
यहविचारकरिमहामोह निरवाराहों॥
तिनिकेचरनकमलत्रयतिमानिकजुग
लपानिशिरधाराहो॥सु०॥२॥इति:॥
॥पुन:॥श्रवहमसुनेंसुगुरकेबैना॥जासुं
सुलेहृदयकेनेना॥हम०॥टेक॥स्वपरपि
छांनाश्रमतनमभारगजानाश्रवमतजैं

॥पद८०॥ ऋाई॥ मिथ्या०४॥इतिः॥दादरौ॥त
॥१५॥ मरीयाजैंहींवीतीजाइ॥टेक॥याविचारैं
चतुररहतेहैं॥मुनिषचितनसुहाय॥त०॥१॥
बालापनव्याल्पनिमैंखोंयौं॥तरुनविष
यविरवषाय॥विरधापनतहपत्रजांनि
जमपवरागत्रगतज्ञगिजाइ॥त०म०॥२॥
दुलेभनरभवुपायताहिसठकुगुरनिसेय
गमाय॥कागउडावरणडागिदधिमनि
फिरियाहैंपछितायत०॥३॥वनिआवें
तौंकछुउपाययहऋौसरफिरिनलहाइ
द्यौंनतीसुद्वसेयमारगिकजासुंअविनाशी
प्रव

चितअभिमानधरतअधिकाईभूलेहैकु
गुरनिग्रसंगकरिकरमविषखातअघाई
मिथ्या॥१॥पुंन्यकर्मशिवमारगहौंगणत
मुदहूयकरतुतिनपाई॥साधर्मिनिकेछि
द्रलखतचितहोयधरतमुखकरतवडाई
मिथ्या॥२॥भरमभावतैंभरमतडोलत
कर्मकलोलनिमैंभटकाई॥अहंकार
ममकाकरतचितधरतकषायभावक
तुघाई॥मि॥३॥खपरजीवकीदयानजा
नतअघकारजहोणतचितलाई॥सानिक
सैंसेंजीवनिकौनितसंगतजैंजिनराजसु

॥पद७॥ ॥१८॥

रंगकेविधाई॥ टे॥ ज्ञानराग त्यागवीतराग भावमांहि

याग यथासक्तिद्वादसतपतपोंसुदूमानसकर॥ सक्ति

तैंदूत्यागधर्मसुक्क ध्यानधाई॥ टे॥ जथासक्तिवैयावृ

तधार आष्टमानटार भक्तिश्रीजिनेंद्रकी सदैवचित

ल्याई॥ टेक॥ आचार्याजकेवंदपादवारजकोभ

क्ति स्वध्यायकी विध्यायसु: ष्टदाई॥ टेक॥ प्रवच

नाकीभक्तिजतनसेतीवृद्ध धरौनित्य आवस्यककी

यामेंनहांनिकरकहाई॥ टे०॥ जिनधर्मकीप्रभाव

नांसुसमेकरिवढावना सुजिनप्रणीतसूत्रमांहप्री

तिकरअघड्डी॥ टेक॥ येहींजोसदांभावताचितु

कलुखताबहावत नसुयरगकमलनध्यावतकुथ

न दयाचरन धारि कायनि भय सब विहाय ॥ टेक ॥ आ

न सहाँ रहाँ द स तप धार सुब्ध्यान स कर येह गेह देह

जानत जौ नेह नाही ॥ टेक ॥ अंतरंग बाह्य संग त्या

ग आत्म रंग पाग ॥ शील रमा रम्य ति विशाल पहर

सो भ नाही ॥ टेक ॥ पह वृषसो पान रात मोक्ष धाम

चढन काज ॥ तन सुख निज गुण समाज केवलीव

नाही ॥ टे ॥ २ ॥ पुन ॥ सोड स कारण सुहृदै धार सकर

भाई ॥ जिन ने जगतारण जिन होय विसराई ॥ टे

निरमल श्रद्धान ठान संकादिक मल नशान ॥ देवादि

क विनय सरल भाव तें कराई ॥ टेक ॥ शील नि

रतिचार धार सार कौं सेव मार ॥ अंतरंग पूरण ज्ञा

पद८०॥ व०॥४॥इति॥अजोंटी॥तिनिजीवनिसूंकसा

२६॥ केहेंना॥जेनिजहितअहितनलखैंना॥तिनि०

टेक॥मोहमाहनीयकर्मअनादितें॥आपा

परपखैंना॥जेनिजहि०॥१॥तनधनगृह

सेवकपरीयनजन॥येपरआगटदीखैंना

जेनिज०॥२॥देवकुदेवसुगुरुकुगुरादिक

इनिमैभेदगिनैंना॥जेनिज०॥३॥शिव

सुखदांनीश्रीजिनवांणीताकूंश्रवण

सुनैंना॥जेनिज०॥४॥हितकेकारणसा

धर्मीजन॥तिनिसूंनेहकरैंना॥जेनिज०

५॥मानिककोंभवतैंनहींडरतै॥तेभवि

परमपाय तुं॰ ॥ ४ ॥ इति ॥ राग डुमरी ॥ अब
मोहि जांनि परी जगमैं जैनधर्म है सार ॥ अ॰
टेक ॥ जामै देव धर्म गुरु आगम तत्व कह्यौं
निरधार ॥ अ॰ ॥ १ ॥ दोश आवर्ण रहित सब
ज्ञायक महा देव सुखकार ॥ ग्यान विरागी प
रिग्रह त्यागी सुगुरु स्वपर हितकार ॥ अव॰ ॥ २ ॥
मोह क्षोभ विनु धर्म कह्यौ निजसौम्य भाव
रस धार ॥ सप्त तत्व षट द्रव्य पदारथ गुण पर्याय को
रुपचार ॥ अब॰ ॥ ३ ॥ हित अहित अहित
निकार गिणमैं हेय उपाहेय विचार ॥ मा
कषा विनु मुक्ति न हूहैं सब संसार असार ॥ अ

॥ ५८० ॥ तुमसुपजथारथपायौं अवइिसानरहीकुमतनमैं ॥ आग
॥ २० ॥ चंदइिमृतरसपीकरिफिरिकीचाहैं विषनिजमनमैं वी
नहीं ॥ इति ॥ पुन ॥ संतनिरंतरचिंतनऐसैं आतमरूप
अबाधितज्ञानी ॥ टेक ॥ रोगादिकतौदेहाश्रितहैं ॥ इनितैं
न होतैंमेरीहांनी ॥ दहनदहंतजिमगहननतंहुतगगनदहण
ताकीविधिआंनी ॥ अं० ॥ १ ॥ वरणादिकविकारपुद्गल
केइनिमैंनहिचैतन्यनिशानी ॥ जद्यपिएकक्षेत्रअ
वगाहींतद्यपिलक्षणभिंनअपिसारी ॥ अंतनि० ॥ २ ॥
मैंसर्वांगपूरणग्यायकरसालवणखिलअवलीलायौं
यांनी ॥ मिल्यौंनिरांकुशस्वादरणआवततावतपरपर
नतिहितमानी ॥ अं० ॥ ३ ॥ भागचंदनिरद्वंदनिरामय
मूरतिनिश्चयसिद्धसमानी ॥ ४ ॥

धरनतेधकरतजिमनातेंडप्रकाशगगनमैं ।।वीत०।।१।।
अजमेयज्ञेयनकेग्यायकनहिंपरनमततदपिज्ञेयनि
मैं ।।देखतनयनअनेकरूपजिमभिलतनहींपुनिअपि
मयनिमैं ।।वीत०।।२।।निजउपयोगआपनैंस्वामीगा
लदियानिस्मृतंनआपनमैं ।।हैंअसमर्थवाजनिकस
नकौलवनमुगनाअेशेजलगगमैं ।।वी०।।३।।तुम
रैंभक्तिपरमसुखपावैंकारतअभक्तिअनंतदुक्ख
मैं ।।जैस्योंमुखदेख्योंतेंसौहोभासतजिमिनिमैंलद
पनमैं ।।वीत०।।४।।तुमकषायविनपमैंशांतिहो
नदपिदसकमोरहतरगमैं ।।जैसैंअतिशीतलतु
षारपुनिजारैतदुमभारगहरगमैं ।।वीत०।।५।।अव

॥पद८॥ ध्यानमिलिबहुतसिष्यचलिसमवसरनके
॥२०॥ माहिगये॥मानस्थंभलखतततसिनहीं
मानसवनिकेदूरिभये॥श्रीजिनेंद्रकौंन
मनिकरतव्रतधरतग्यानचउपायल
ऐं॥अक्षररहितविरीप्रभुकीधुनिसुनि
कैंरकैं।भविभूतिबोधभरे॥धनि:॥२॥
श्रीजिनेंद्रकीधुनिगणेसैंसप्तभंगम
यझेलिलई॥सोईअवअक्षरसरूपकरि
द्वादसांगमयगूंथिदई॥ताहीक्रमतेंब
हुअमनिकीरचिसिद्धांतवरबोधम
ई॥पढतसुनतबडभागभव्यनिनिकौ

नौ ॥ तेजग ॥ ४ ॥ इति: ॥ अस्तुति श्री गोतं
म स्वामी की चाःलाठनी: ॥ धनि धनि गो
तम स्वामी ॥ तुम कलिकाल मांहि यह काज
कीया ॥ मिथ्यापथ भ्रमते भव्यनिकौं शिव
मग वर हरसाय दीआ ॥ धनि धनि ० टेक ॥ श्री
वीरनाथ कौ केवल उपजत मघवा आ
यौ ताहि समै ॥ यह तौ बात होयें नहीं ओनी
प्रभु वांनी क्यों न हि उपटी ॥ अवधि जो
डि की रिइंद्र भ्रतके पास जाय इक काव्य
पठौं अर्थ कहन असमर्थ होय तव कहि
लैं तुम गुरु ढिग डो ॥ धनि धनि ः १ ॥ तीनि

पद९॥ पनौहैं किमिमैं वु:॥६॥ इति:॥७॥ पुनि॥ जीवनिके परनांमनि
२५॥ कीयह अतिविचित्रता देखहु ग्यानी॥ टेक॥ मुनियेका दर्शि
गुणथानक चढि गिरत तहांते चिन मुमहांनी॥ मन अथ पुद्ग
लपरवत न किंचित ऊनकाल परमानी॥ जी०॥१॥ नित्यनि
गोदमांहि सैं कढि कीनर परजाय पाय सुखदानी॥ समकित
लह अंतरमहूर्तमें केवल पाय वरें शिवरानी॥ जी०॥२॥
निज परिणांमनि की सम्हार में तातें गाफिल मति होय प्रा
नी बंधमोक्ष परिणांमनिहीतैं कहित सदां श्री जिनवर
वांनी॥ जी०॥३॥ सकल उपाधिक भावनितें अब भिंन
सु निजपरनतिकौं सानी॥ ताहि जानैं रुचि ठान होहु थिर
भागचंद यह सीख सयानी॥ जीव०॥४॥ पुन:॥ अति

सैन मिं० ॥ हौ ॥ ईं: नित्य अकलंक अबंक संक बिनु निर्मल पंक
बिना जिम पानी ॥ सैन निं० ॥ दो ॥ ह्रिति: ॥ पुन ॥ बुधिजन पर
खिपात न जिहै थौं सांचा देव कौन हैं ह्रिनि मैं ॥ बु: ॥ टेक ॥ ब्रंत्म
दंड कमल धारि स्वांत ओंत वसन नारि निमैं ॥ मृगछाला मा
ला मैं जी पुनि विषयासक्ति निवास नलिन मैं ॥ बुधि: ॥ १
संभु वड़ा अंग गल हित भुजंग निसा भोग मगन निज्ञा दिनै मैं ॥ हस्त:
कपाल व्याल भूषण पुन हेड माल तन भस्म मलिनमैं ॥ बु० ॥
२ ॥ विष्णु चक्र धार मयन बाण वस लज्जा तैरमना गोपिनि मैं
क्रोधानल जा ज्वल्य मान भुनि तिनि की होत न प्रचंड अरि
निमैं ॥ बु० ॥ ३ ॥ श्री अरहंत पूर्ण गणवैरागी दूषण लेश पेवेश
नहिं निमैं ॥ भागचंद जिन कौ स्वरूप यह अब कहै पुरप

॥पद० ॥ विजैं केंत्याल्याये ॥ टेक ॥ असातनपसूक्ष्माकृदंतनविकैं
॥२२॥ कल्याणावतपारेजी ॥ जगतविभूतभूतिसमतजिकैं
अधिकविरागवढायेजी ॥ उग० ॥ १ ॥ सुद्धानगनधारि
तंद्राविन आनमवृंललचिस्याऐजी ॥ उजैंयंतिगिरि
सिखिरोपरचढिसुचध्यानकमैं ध्यायेजी ॥ उग० ॥ २ ॥ पंच
मुष्टकचलुंचमुंचरजसिद्धनकौं शिरनायेजी धवल
ध्यानपावकज्वालामैं कर्मकलंकजलायेजी ॥ उग०
॥ ३ ॥ वस्तासमस्तहस्तरेखावतयुगपतिहोदरसायेजी
निविसेषविध्वस्तकर्मकरशिवपुरकाजसिधायेजी
उग० ॥ ४ ॥ अव्यावाधअगाधवोधमयतआनंद
सुहायेजी ॥ जगभूषणदूषनविणस्वामी भागचंदगु

संक्लेसविसुद्धसुद्धिपुनरविधिजीवपरिनामबखानै।टेक।ती
व्रकषायउदयतैं भावितद्वितहिंसादिकअघठानीं
सो संक्लेसै भावफल नरकादिकगतिदुख भोगतअसह
नैं ।।अति०।।१।। सुद्धोपयोगकारनमैं जो रागकषायमंद
उदयानैं ।सो विसुद्धितसुफलइंद्रादिकविभवसमाज
सकलपरमानैं ।।अति०।।२।। परकारनमोहादिकतैं च्युत
दरसनग्यानचरनरससानैं सोहै सुद्धभावतसुफलतैं पहुं
चपरमानंददिकानैं ।।अ०।।३।। इतिनिमैं पुद्गलबंधके
कारनपरद्रव्यामुतहेयप्रमानैं ।। भागचंदसुसमयनिज
हितलखितामैं रमिरहियैं भ्रमहानैं ।।अति०।।४।। इि:
।।रागबटूकौ ख्याल:।। उग्रसैं नियहद्व्याहनआए समद

पद ९ ॥ ऽमैंवंमानसंतजनहीयरा॥प्रभु॥२॥पुना॥अरेहोजी
२२ ॥ यरा मैंमैं चिंतलगाठे॥टेक॥विषयविषसमजानि
भौंदूंयाकौं जुभयायो॥अरे॥१॥संगभारविवाद
तोकैं कारनक्या नहिंभायो॥अरे॥१॥२॥रोगजरा
निवापूवामीकहा नहियहकायो॥अरे॥१॥२॥कालव
हाकीगजेनाक्यातोहसुननपरायो॥आपदाभर
नित्यतोकौंकहा नहिंदुषदायो॥अरे॥३॥यादिनोह
कहा नहीदुषनरकके॥असहायो॥नदीवेंतरनीजहां
जीयपैंअतिविललायो॥अरे॥४॥तनधनादि
कथनपदनसमक्षिनकमाहि विललायो॥भागचंद
सुजानहिंमजडकुल तिलकगुणगायो॥५॥अरे॥१

रागगाऐजी उग्र० ॥ ५ ॥ इति: ॥ चरचरी ॥ सांचीतौंगंगा
यहवीतरागवानी ॥ अवस्यंअधारानिजधर्मकीकहानी
टेक ॥ जामैंअतिनिर्मलअगाधज्ञानपानी ॥ जहांनही
संसयादिपंककीनिसानी ॥ सांची० ॥ १ ॥ सप्तभंगजह
तरंगउछलतसुखदानी ॥ संतचितमरालवृंदरमैंनि
त्यग्यानी ॥ सांचीतौं० ॥ २ ॥ जाकेअवगाहनतैंसुद्ध
होइप्रानी ॥ भागचंदनिहचैघटमांहियाअमाणी सां
चीतौं० ॥ ३ ॥ इति: ॥ प्रभाती ॥ प्रभुतुममूरतिद्रगसौंनि
रखैंहरखैंमोरीजीयरा ॥ बुझतकषायानलपुनउपजै
ज्ञानसुधारससीयरा ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ वीतरागताप्रगटहो
तहैशिवथलदीसैंनीयरा ॥ भागचंदतुमचरनकम

पद॰ २५

निरखी टेक॥ रतनत्रय आभूषन मंडित थे कैसे ये कस वाड़ी॥
घ्यांनि॥१॥ चौरासी लख बडम गुन गन सहित वरात सुहाई
घ्यांनि॥२॥ तपरथ पैं आरूढ आनूपम धर्म सुमंगल दाई
घ्यांनि॥३॥ शिवरमनी कौं पांन ग्रहण करि ज्ञानानंद उ
पाई॥ घ्यांन॥४॥ भागचंद ऐसे बनडा कौं हाथ जो
रै सिर नाई॥ घ्यांन॥५॥ इति॥ धनाश्री॥ प्रभू थांकौं
लखि मम चित हरषायौ॥ टेक॥ सुंदर चिंतारतन अमोल
कं रंकपुरुष जिमि पायौ॥ प्रभू॥१॥ निमें रूप भयौं अ
व मेरौ भक्ति नदी जल न्हायौं॥ प्रभू॥२॥ भागचंद अव
मम कारतं लखै अविचल शिवफल पायौ॥ प्रभू॥३॥
इति॥ लावनी॥ धंन्य धंन्य है घटी आज की जिनसु

॥ इति ॥ पुनि आसावरी ॥ श्री जिनवरपद ध्यावैं सो जे
नर श्री जिनवरपद ध्यावैं ॥ तिनिकी कर्मकालिमा विनसैं
परमब्रह्म होय जावैं ॥ उपल अगनि संजोग पाय जिम कंच
न विमल कहावैं ॥ श्री० ॥ १ ॥ चंद्रोज्वल जस तिनिकौं ज
ग मैं पंडित जन नित गावैं ॥ जैसें कमल सुगंध दशौं दिस पव
न सहज फैलावैं ॥ श्री० ॥ २ ॥ तिनहि मिलन कौं मुक्ति
सुंदरी चित अभिलाषा ल्यावैं ॥ कृषमैं ज्यौं नहि मसहज
ऊपजै त्यौं सुरगादिक पावैं ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जन्म जरा मृत
दावानल जे भाव सलिल सु जावैं ॥ भागचंद कानहि
बरनैं तिनहिं इंद्रधिरनावैं ॥ श्री जिन० ॥ ४ ॥ इति:
॥ जंगला ॥ शांत्यवरण मुनि लाङ्गीवन ड्राझांतिवरण मु

॥पद०॥ कवनिज०॥२॥कवथिरजोगधारियेकास
॥२४॥ न नैंकनचितचलास्यां॥कवधोध्यानचमू
सजिकरिवरु मोहारातिभगांस्यां॥कव०
॥२॥भेदग्यानंकरिनिजमेंनिजधरिपरपरन
तिछुटकास्यां॥ऐसीदशाहोइगीमा
कजवजीवनमुक्तिकहास्यां॥कवनिज०
तमकेगुनगास्यां॥जासूं॥कव०॥२॥इ
तिः॥पुन॥मिथ्यादृष्टिजीवजगतमेंइ वकु
मप्रपंचकरतेहखाइ॥मि०॥टेक॥यैमे
स्वरूपनजानतरागनपक्षपातधरिक
रतलडाइ॥देवधर्मगुरुरूपगहतनहि

उचारौं ॥ भूधनवरसनगरिगिरिऊपर ॥ पंच
महाव्रतधारौं ॥ शि॰ ॥ २ ॥ पंचसमितित्रयगु
पतिसविनिजतनसुखपाखविस्तारौं ॥ नि
जानंदअनुभवरसमैंरस किंभयौजगत
सैंन्यारौं ॥ शिव॰ ॥ ३ ॥ काजहोयविनिके
दिगसजनौविनुविनकोइनेहमारौं ॥
मानिकजगअसारलखिराजुलिकीनौ
गहसैंपयानौ ॥ शिव॰ ॥ ४ ॥ इति: ॥ तिताला ॥
कवनिजआनमकेगुणगास्यां ॥ जासूं मेरे
नहीभटकास्यां ॥ कव॰ ॥ टेक ॥ कवगृहवा
सआडिवनसेधूं ॥ निजअनुभूतिलखास्यां

पद७॥ सकलसास्त्रधरी॥ धंन्य ७॥ रविच्छमतापहरनलगसीनि
२५॥ सुष्पनुभवमेघझरी॥ पभेदज्ञान भावनकीतानैं हो शीहु
द्धपरी॥ धंन्नि ०॥ २॥ वेशुाटिज्ञकति भंगजबहोसीजुतन
भंगसवरी॥ तबकेवलदरशान विबोधसुषवीयकलाप
सरी॥ धंन्नि ०॥ ३॥ लषिहैंसकलद्रव्यगुणपर्यायपरन
तिअनितगहरी॥ ४॥ धंन्नि ०॥ भागचंदजवसहजहोमि
लिहैं अचलमुक्तिनगरी॥ धंन्नि ०॥ ५॥ इति:॥ वि
वरः॥ सुमरसदामनआतमरांम टेक सुजनकुटंबीजन
तूंपोषेतिनिकोंहोयसैदंवगुलांम सोतौहैं स्वारथ
केस्वामीअंतकालनहिंआवतकांम सुमर ०
१ जिमभरीचकोमैं भ्रमभटकैपरतसोजवग्रीष

निजअवलणपरी॥ तत्वरुचीतिभई॥ अवमेंमिथ्यादृष्टिटरी
टेक॥ जडतेभिंनलखीचिनमूरतिचेतनिस्वरसभरी॥ अ
हंकारममकारबुद्धिपुनिपरमेंसबपरहरी॥ धंन०॥१॥ पापपु
न्यविधिबंधअवस्थाभासीअतिदुखभरी॥ वीतराग
विग्यानभावमयपरणतिअतिविसतरी॥ धंन०॥२॥
चाहदाहविनसीवरसीपुनिसमतामेघजरी॥ बाढी
प्रीतिनिराकुलपदसैंभागचंदहमरी॥ धंन०॥धंन०॥
३॥ इति॥ पुनि॥ धंनधंन्यवाघडीजबऐसीअति
निर्मलहोसीपापदसाहमरी॥ टेक॥ वनवासीकरपात्र
परीसहसहसौंधीरधरी॥ धंन्य०॥१॥ दुर्धरतपनिर्भरनि
तनपुहोमोहकुवृक्षकरी॥ पंचाचारक्रियाआचारहीं

१८० ॥ सकुमारनीघैरानुकरतार ॥टेक॥ प्रभुलखिजाहिपुरवम्ात
२६ ॥ आहिचितहरखोयतदारनवधाभक्तसमेतईसु स
प्रासुकदयौआहार ॥ प्रभु० ॥ वूरतनवृष्टिसुरगननवर्षी
नीअमितअमोघसुधारकलपवृक्षपहुपनिकीवर
षाजहांअलिकरतगुंजार ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ सुरदुंदभिसुरराञ्
तिवाजीमंदसुगंधवयार धनधनयहदानाईमनमें
चहूंदिशहोतउचार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ जसताकौअमरी
नितगावैं चंद्रोज्वलअविकार ॥ भागचंदलघुमति
क्यावरनैंसोलैपुंन्यअपार ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति: ॥ ः
मल्हार ॥ मेघघटासमश्रीजिणवीनी ॥टेक॥ स्यात्पदचप
लाचमकतजामैंवरषातग्यानसुपांनी ॥ मेघ० ॥ १ ॥ धर्म

मअतिधाम तैसैं तूं भवमाहिं भटक्यौ धरतनाईक छिनक
हूं विश्राम ॥ सु० ॥ २ ॥ करतनगलीन अवैं भोगनिमैं भरतनवी
नरागपरिरंमाम ॥ फिरि किमनरकैमाहु दुखसहसी जहां सुखरै
श्रान आर्ढौ जाम ॥ सु० ॥ ३ ॥ तातैं रव आकुल भवितजिकै थिरहोइवे
हौं अपनैं धांम ॥ भाग चंद विशुद्ध ज्ञान नगरमैं तजि रागद्वे
दूगसवधाम सु० ॥ ४ ॥ इति ॥ सोरठि ॥ स्वामी मोहि अप
नौं जानतारौं याविनती अवचितधारौ ॥ स्वा० ॥ १ ॥ जग
तजागरकरुनासागर नागरनांम तिहारौं ॥ स्वा० ॥ २ ॥ भव
अटवीमैं भटकत भटकत अवमैं अतिहीयहारौं
स्वा० ॥ ३ ॥ भागचंद स्वमुद्दगपारामयपद्धव अनंतवि
स्तारौं ॥ स्वामी ॥ ४ ॥ इति ॥ ठूमरी ॥ धनधनअरीलेपां

॥पद८०॥ ॥कृ७॥

रत्नाया॥ सारथवाह भये शिवपुरके॥ तिनिसूं नेह
लगाया॥ अव०॥४॥जि निपाया तिनि सुगुरु ध्या
या॥ तिनिका जस जग गाया॥ याधनकों विल
से जे मानिक तिनि अनंत सुख पाया॥ अव०
२॥ इति:॥ २४॥ पुनः॥ राग भैरों॥ सुंदर दसल
क्षिन वृष सेय सदां भाई॥ जासैं ततक्षन जनहो
य विसराई॥ टेक॥ क्रोधकूं निरोध शांत सुधाकूं
निनांत सोध॥ मान हानके भजौ स्वभावकों मलाई
टेक॥ सत्य वलत जसदां विमल भाव सरलता
ई॥ भजि०॥ सवैजीव चैन देन वैनक हासुहाई॥
टेक॥ ज्ञान तीर्थ स्नान दान ध्यान भांन हूदै आं

सिंधुतैरंना ॥ जैनिजगं ॥ ४ ॥ इति: ॥ भुन ॥ अवहम
जैनधर्मधनपाया ॥ टेक ॥ याहहीनकष्मन
मैंजबकरचिंतामनिआया ॥ अवं ॥ १ ॥ चि
रतैंरंकभयौभ्रमकीर ॥ गतिगतिमैंवहुभटका
यौं सुगुरुदयालनघायमहाभ्रम ॥ निजध
ननिकटदिखाया ॥ अव ॥ २ ॥ रत्नत्रयनिधिहैं
अदूट साक्षमैंनियैंपरवायाहृदयकोपुगमैंराखिनि
रंतर ॥ नितप्रतिचितमैंभाया ॥ अव ॥ ३ ॥ कुगुरादिक
वहुफिरतलुटेरे ॥ तिनिकासंगछुटकाया ॥ इंद्री
ययपरलचोरटिगवैठे ॥ तिनिकाजतनकराया ॥ अ
व ॥ ४ ॥ याथनरक्षकदेवसुगुरुंश्रुतकीप्रतीतिउ

पहुगलतषग्राहित जाननजंजरबूरतिनिकौंछुटकावैं ॥ग्रेरे ॥०१॥
कर्मसुभासु भवंधउदयमैंहवैविखाद चित्तनहीं त्यावैं ॥ निज
हितहेत विरागज्ञानलखि तिनिसैं अधिकप्रीतिउपजावैं
अरे ॥०॥२॥ विषयचाहतजि आत्मवीर्यजदुखदायकीव
धिवंधविरावैं ॥ भागचंद शिवपदसवसुखमय आकुल
ताविनलखिचितचावै ॥० अरे ॥०॥३॥ इति: ॥ मल्हार ॥

अरेहो अज्ञानी तूनेंकठिन मनुषभवपायौं ॥टेक॥ लोचल
रहितपुरुषके करमैं निजवटेरयग आयौरे ॥ अरे ॥०१॥
सो तूंखोवत विषयनिमाहीं धर्म्म नहीं चितल्यायौरे ॥ अ
रे ॥०॥२॥ भागचंद उपदेशमानअव जो श्रीगुरुमासौं
अरे ॥०॥३॥ इति: ॥ खंमाच ॥ श्रीगुरुहैंउपगारीवे:

स्वच्छ जाने वढुवा दै षिंवश्यांनंद फल दानी मेय॰ ॥२॥ मोहन
धूलि हवीसवयानैं क्रोधानलबुझानी मेय॰ ॥३॥ भागचंद
वुद्ध जगके की कुल कल विहरैवें चित ज्ञानी मेय॰ ॥४॥ इति
॥कालिंगडा॥ ऐसे साधु सुगुरु कव मिलि है॥ टेक॥ आपतरैं
अरपर कौं तारैं निस्पृही निर्मल हैं॥ ऐसे॰ ॥१॥ तिलतुसमात्र
संग नहि जिनकैं ग्यान ध्यान गुण वल हैं॥ ऐसे॰ ॥२॥ सांत
दिगंवर मुद्रा जिनकी मंदिर तुल्य अचल हैं॥ ऐसे॰ ॥३॥
भागचंद तिनिकौं नित चाहैं जौं कमलनिकौं अलि है॥
ऐसे॰ ॥४॥ इति:॥ सोरठि मल्हार:॥ गिरिवनवासी मुनि
राजमनवसीया म्हारैं हो स्वामीजी॥ टेक॥ कारण विन उप
गारी जगके तारन तरन जिहाज॥ गिरिव॰ ॥१॥ जन्मजरामृत

॥ पद ८० ॥
॥ पूरी ॥

थ वीतरागपरनतिहीभवसमुद्रतरनी॥ परन० टेक
१॥ त्यागस्तुभकीपाकलापकरौंमतिकहाचिपाप
सुभमैंनमगनहोंयशुद्धताविसरनी॥ परन०॥२॥ जावत
शुद्धोपयोगपावतहैंनहींमनोग॥ तावतहीकरनजोग
कहीपुंन्यकरनी॥ परन०॥ ३॥ ऊंचऊंचदशाधार॥ नि
तश्मारकौंविडारि॥ ऊंचलीदशानेमतिगिरैंअधोधरनी
परन०॥ ४॥ भागचंदसाधकाजीवलैहेसुखअपार
याकेनिरधारस्याद्वादकीउचरनी॥ परन०॥ ५॥ इ:
॥ जओटी ॥ वीतरागजिनमहिमाथारी॥ वरनसकें
कोजनत्रिभुवनमैं॥ टेक॥ तुमरेंअनंतचतुष्टयप्र
गटैंनिःशेषावरनक्षयधिसिगमैं मेघपटलवि

भागचंद गाइ॥ टेक॥ रम्मी जिनवर दरसु आज करत सुख पाया॥ अष्टप्रातिहार्ज सहित परम शांति काये॥ टेक॥ वृक्ष है अशोक जहां भ्रमर गोन गाया॥ सुंदर मंदा र पहुप वृष्टि होत आया॥ टेक॥ ग्यानमृत भरी वांनि खिरैं भ्रम नशाया॥ विमल चमर दोलंत हरि ढुरैं भक्ति ल्याया॥ टेक॥ सिंघासन प्रभाचक्र वाल जग सुहाया॥ देव दुंदुभि विशाल जहां सुरव जाया॥ टे०॥ मुक्ता फल माल सहित छत्र ती निखाया॥ भागचंद अदुत छवि कहि न जाया॥ टेक॥ प्रभु नपर न निंसव जीवनि कैं तीनि भांति वरती॥ टेक॥ पाप रे क पुन्य ये करण हरनी॥ टेक॥ तीर्मैं मुभ अभ सुभ अंध दीय कौं कर्मवं

॥पद ०९॥ कमलु आस्रयतैं अरिनासक दुनिवारी ॥ श्रीमं० ॥४॥ श्र
॥२५॥ यश्रुत लखमोद विधायक ताकौ ध्याम अपारी ॥ कर्मेध
रा विचगतौ सो चितसैं आनम निध्यि अविकारी ॥ थिर
ता हिसैं करकमैं जैती सगबुद्धि कुदारी ॥ निज सरधां
ग्यान चरणात्मक निश्चय शिवमग चारी ॥ भाग्य
कें
दसैं श्रीम्मीठानिं फिर फिरयो कहमीरो ॥ श्रीमं०॥८
इति ॥२५॥ रागसारंगनी ॥ अरिरज रहस्य हनन प्रभु अर
हं जैवंतो जग मैं ॥ देव अदेव सेवक जाकी धौं रमौं चिपग
मैं ॥ टेक ॥ जानंन अष्टोत्तर सहस्र लखिवंत उमि कलित
गमैं ॥ ज्ञानव दीप प्रकाशौ तैं मुनि विचरैं शिव मारग मैं
अरि० ॥१॥ जास पासतैं सोकहर रागगुन अग ट नयौ नेंग

ऐसे श्री गुरु हैं उपगारी वे ।ऐसे श्री गुरु हैं उपगारी वीत
रागधारी ।टेक। स्वानभूति रमनी संग कीडैं ग्यान संपद
भारी ।ऐसे श्री ॥१॥ ध्यान पींजरा मैं जिनि ऐ कीं चि
त खग चंचल चारी वे ।ऐसे श्री ॥२॥ तिनिके चरन स
रोरुह ध्यावैं भागचंद अघ टारी वे ।ऐसे श्री ॥३॥ इति:
परज ॥सम आराम विहारी साधूजन सम आराम वि
हारी ।टेक। ऐक कल्पतरु पुष्पनि सौं तें जयत भक्ति वि
स्तारी ।ऐक कंठ विच सर्प ना धीयो क्रोध दर्प जुत भारी
।राखत ऐक भुत दोउनि मैं सब ही के उपगारी ।सम ॥१॥
सारंगी हरबाल चुखावैं पुन मराल मंजारी ।व्याघ्र बाल
करि सहित नंदनी व्याल नकुल की नारी ।तिनिकै चरन

।पद ८०।। ।।३०।।

अजगतमैंहरिभूलिअपनपौंभयौदीनहैंरानावें दौल सुगुरुकथुनिवुनिजिनमैंनिजलक्ष्यौंअचलसुखथाना वे निपद ७७ इति:।।राग गौरी।।श्रीजिणवंदच रणचिंतामणिचिंततव्याधिगई।।तारणमरणहरण दुखदारणतारणनारणसही।।श्रीजिनबू।।कलुषकलंक पंकप्रदयालणपयप्रतरणउमही।।भव्यकंजपुंजनि ओझाभ्रमआसणपूतकही।।श्री।।२।।नंदअनेकुह चंदननंदनसीतलकेदयही।।शिद्धिवद्विनवनिद्धिरि द्विकरियासमऔरनही।।श्री।।३।।इति:।।राग विलाव लि मैं:।।निरखिसखीरिखनकौईसपहरिखभजिनपर खिकैंखवपरपासौंजस्पारी।।टेक।।नैंननासायधारिसैंनाति

मैं ॥ या लमएल कुरंग तिस कौं जात विरोधगमैं ॥ श्री० ॥
२ ॥ जाजसगगनतलंबरकौं ठसमरणमुनिमगमैं ॥ दौ
लतनाम सतगुरु नकहै यां भवमरणपलमगमैं ॥ श्रीजर
हत्य ॥ ३ ॥ इति ॥ निपट अयानौं तैं आपन जानौं नाहक भ
रम भुलानावें ॥ नि० ॥ टेक ॥ पीय अनादि मोहमद भैं:या
परपद मैं निज मानावें ॥ तातैं भ्रम्यौं चतुर्गति माहीं भव
हूं तें बिनि जवानावे ॥ निपट० ॥ १ ॥ चेतननिचिंह भिंनज
ड़ तासौं ग्यानदरसरससानावे ॥ तिनिमैं छिप्यौं न तद
पि त्यौं जलमैं कजदलमानावे ॥ निप० ॥ २ ॥ सकल भा
व निज निज परणतिमय कोई न होय बिरानावे ॥ तू दु
खिया परकृत्य मानि ज्यौं नभताडन श्रम ठानावे ॥ नि० ॥ ३

पद०
३१

४ गुणचितवननिजअनुभवप्रगटैविघटैविधिठगदुखिय
तरसदौलतअवाचीसंपतिजाची।।पायरहैथिरराचरसरस
रावरै।।४।।इ:।।पुनः।। वंदौंअद्भुतचंद्रवीरजिनभविच
कोरचितहारी।।टेक।।सिद्धारथनृपकुलनभमंडनखंडन
भ्रमतमभारी।।परमानंदजलधिविस्तारनपापताप
छयकारी।।वंदौं अ०।।१।।उदितनिरंतरत्रिभुवनअंतरकी
रतिकिरनिपसारी।।दोषमलंककलंकअटंकितमोह
राहुनिरवारी।।वंदौं अ०।।२।।कर्मावरणपयोधअरोधितबो
धतशिवमगचारी।।गणधरमुनिजनसरोजगनसेवननिति
पुरणछिनिधारी।।वंदौं अ०।।३।।अखिलअलोकास
कलंधरण।।जासज्ञानउजियारी।।दौलतमनमधाकुमु

नमायकीमैनिजुनस्वासदिशुसरजिकारी॥ निरखि०॥१॥ थ
रासमस्मानिजुनतरामख्वयरजुन॥ किजुनरागादिमदुदुदहा
री जासकमपासभूमनाश्चपंचास्यमृगवासकीप्रीति
कीरीनिवारी॥ निरखि०॥२॥ ध्यानदौंमाहिविधिदाझ
जराहिसिरकेसमुभकिधौंधूवांविथारी॥ फसेजगपंक
जनरंकतिनकाढनें॥ किधौजगनाहवाहुबयारी॥ नि
रखि०॥३॥ तनमहाटकवरनवसनविनआभरनधरेथिर
ज्यौंसिमरमेरुकारी॥ दौउकौंदेनप्रिवथौलजगमैं
उनेतिहकौजोरिवंदनहमारी॥ निपरखि०॥४॥ इति॥

॥सोरठि॥ ॥सिवमगदरसावनरावरौंदरस॥ टेक॥ पप्पद
चाहदाहगदनासन॥ तुमबचअमृतपानसरस॥ रावरौं

॥५६७॥ नराच्यौंजी ।धनकेकारनगतिगतिमाहींनाइकनाचौंजी
॥३२॥ सूंतसुयकेकाजधरमैमैंपांऊंसोंसांच्यौंजी ।१। पूरवपुंन्य
ऊदेंतमिलैंतवराचौंमाचौंजी । बुधजनगुरुकेंवेचनहि
यामैंजान्यौंसांच्यौंजी ।४। ढि: ।मल्हार। धनिसम
साहमीजनमिलनकीघरी । जहांबरसतभ्रमताप
हरनग्यानघनझरी । धनि । जाकेविनपायैंभववि
पतिअतिभरी । निजपरहितअहितकीकछूनसुधि
परी । धनि ।२। जाकेपरभाववचितसुथिरताकरी
संसयभ्रममोहकीकुवासनाटरी । धनि ।२। मिथ्या
गुरुदेवसेवटेवपरिहरी । वीतरागदेवसुगुरुसेवउर
धरी । धनि ।३। चारौंअनुयोगसहितदेसादिटपरी

द्रिमोहनजयवंतोजगनामि॥वंदौं०॥६॥इः॥पुन॥चिं
नमूरतिद्रगधारीकी मोहिरीतिलगतहै अटापटी॥टेक॥बाहि
रनारककृतदुख भोगें॥ अंतरसुखरसगटागटी॥ रमतअनेक
सुरनपैंतिसपरनितितैंनितहटाहटी॥चिंन०॥१॥ग्यानवि
रागसक्तितैं विधिफलभोगतपैंविधिघटाघटी सदन
निवासीतदपिउदासी॥ तातैंआस्रवछटाछटी॥चिंन
२॥जेभवहेतुअबुधकैं तेतसुकरतबंधकीझटाझटी
नारकपसुत्रियसंढविकलत्रयप्रकृतिकटाकटी॥चिं
३॥संयमधरिनसकैंपैंसंजमधारनकीउरचटापटी
तासुजनगुनकीदौलतकैं लागिरहैंनितरटारटी
चिंन्मू०॥४॥इः॥पुन॥ भवभवमैंदुखदेतयनामतभोग

५८० ॥ ड्रिनतजिग्यानपियूषचष्यौंतिनिदौलल्हीभववारिपा
॥३२॥ र॥विषय०॥धू॥पुन॥धनिधनिवेमुनिराइजगनगुर॥ध
निध०॥टेक॥पावसिकालविरछकेनीचें॥ध्यानधरतव
नजाइ॥मांषीडांसकाटेंतनवीछू॥नेकनषेदमनप
ड़ै॥जगतगुर०॥१॥सीतकालसरिताकेतटिहू०
वनषडेरहांइ॥तत्वविचारकेंघटभीतर॥आतमसैं
लौंलाइ॥जगत०॥२॥धूपसहैंजेठीमगितुमैंपहा
ड़तपत॥अधिकार॥नासरसिंतापरवैंहैंनिरंतर॥
धीरथैंमुनिराइ॥जगत०॥३॥येकवारभोजनवू
तसाधैं॥पंचमासयहूजाइ॥नगनसरूसहैस
वपरीसहसुषकारनमनल्याइ॥जगतगुरु०॥४

शिवमगकेलाहकौतुकं चाहविसरौ ॥ ध्यांनि० ॥ ४ ॥ संभ्य
कनहधरनिवहैं कानकौरहौ ॥ भवजलकुं तारनिसम
रथुजग विख्यातौ ॥ ध्यानि० ॥ ५ ॥ वभवयाअष्टादसमनि
शिवबरौ ॥ ध्यो वैं अबदौं ठया हिवा नयहषरौ ॥ ध्य
नि ध्यानि० ॥ ६ ॥ इति ॥ दीपचंदी ॥ गुरुकहतसौअइम
वास्वार ॥ विषसम विषीयनिकौं टारि टारि ॥ गुरु० ॥ टे
क ॥ इनि सेवत अनादिदुष पायौ ॥ जनममरनबहुधा
स्यार ॥ वि० ॥ १ ॥ कर्मों अनवाधाजुतनाशीदुःषदा
वनबंधकार ॥ विष० ॥ २ ॥ येन इंद्रकैं तृप्तिहेतु ज्यों ति
सनबुझावन सारवारि ॥ विष० ॥ ३ ॥ इनिमैं सुष कल
पना अबुधकैं बुधजनमानतदुषप्रचार ॥ वि० ॥ ४

॥पद०॥ रूप ॥ होउ निकीये कतासु जानी दुखदाई ॥ जबतैं ॥१॥ रागादिक
॥३४॥ बंधहेत बंधन बहु विपति देत ॥ संवर हित जानि तसु हेतु ग्यान
ताई ॥ जबतैं ॥२॥ सब सुखमय सिव है तसु कारण विधि झर
न ठिमन तत्व की विचार निजवानि सुधि कराई ॥ जबतैं ॥३॥ वि
षय चाह ज्वाल तैं दह्यौ अनादि काल तैं सुधा बुस्यात पदां क
गाह हैं प्रशांति आई ॥ जबतैं ॥४॥ या विन जगजाल मैं न
सरन तीन काल मैं ॥ संभाल चित भजौ सदैव दौल रे कैंह
सुहाई ॥ जबतैं ॥ आनंदजन निदृष्टि परी माई ॥०॥ पूरि
ति: ॥ पद॥ तू काहे कूं करैं रति तन मैं यह अहित मूल जि
म कारा सदन ॥ तू काहे कूं करैं रति तन मैं रहत मति काहे
हेका ॥ कीकस पूरत उपलविधि पल करि बधे नस न के
नैसकैः

पुन॥ हे नर भ्रमनींद क्यौं न छाडत दुखदाई॥ सोवत चिरका
ल सौंज आपनी ठगाई॥ हे॥ मूरख अघ कर्म कहा भेदै
नहीं मर्म कहा लागे दुखज्वाल कीन देह कैं तन ताई॥ हे॰
॥१॥ जम के रव बाजते न सुनि स्रैं कहा गाजते अनेक प्रा
रा त्यागते सुनै कहा न भाई॥ हे॰॥२॥ पर कूं अपनाय आ
पूपकौं अनाय कारण विषय दाह सारडारि चाहदौं व
ढाई॥ हे॰॥३॥ अब सुनि जिनवांणि रागदोष कूं जया
नि मो स्वरूप कौं निज पिछाणि दौंत भजि विराग ताई॥
हे॰॥४॥ इति॥ रागजंगलाकौं ठी॥ जव तैं आनंद
जननि दृष्टि परी माई॥ तव तैं संसय विमोह भर्मता विला
ई॥ जव तैं॰॥ १॥ टेक॥ मैं हूं चितचिन्ह भिन्न परतैं पर जड स्व

॥पद८॥ नचरननिधियरतहारनक्रमचोरनैं॥१॥धनिमु०॥जथाजातमुद्रामु
॥३५॥ नमुंद्रासदनविजनगिरिकोरनैं॥तृणकंचरण्मरिस्वजनगिन
नसम॥निंदनश्रीरनिहोरनैं॥धनि०॥२॥भवसुषचाहसकलतन
जिवलतसजि करनहुविधितपघोरनैं॥परमविरागभावयवितैंनि
तफोरतकरमकठोरनैं॥धुनिमु०॥३॥छीणसरीरनचिदानंदमो
रतमोहफकोरनमैं॥जगतपहारनविकुमुदनिशाकमोदनदोऊ
चकोरनैं॥धनिमु०॥४॥इति॥पद॥तोहिसमजायोरे सोसों
वार॥अरेसोसो॰॥टेक॥देषिमुगुरकीपरहितमैंरति॥हितउप
देशमुनायोरे॥सोसों॰॥१॥विषयभुजंगसेयदुखपायो॥पुनि
तिनिसोंलियटायो॥सोसों॰॥२॥स्वपरविसारिस्योंपरपदमें
मंदरतज्योंबोरायोरे॥सोसो॰॥३॥तनधनस्वजनदैहेतेरे॥ना

गनमें ॥तू०॥१॥ चरमपिहितपरहाथिरविपतमरहाम्रैवेंसिं

नसिन॥तू०॥२॥ भ्रपुनिगरफसिविपतिमैंसोरवेंयांनचि

नागितमनैमें ॥तू०॥३॥ सूचरनरगितयोगि भ्रवयाकुंज्यौंनमृ

मेंभववनमें दौलदेहसूंनेहदेहकोहेतुकह्योंजग्यनिमें ॥तू:४

इ:॥सोरठि:॥धुनिमुनिजिनयहभावपिहांनां॥टेक॥तनत्य

यवांसितप्रशतिमांनीपुंन्यउदयदुखजानां॥धनि०॥१॥ एकविहारस

कलईश्वरतात्यागग्रहोहसवमानां॥भवसुषकोपरिहारसासुथ

जानिरागरूमानां॥धनि०॥२॥ चितमुभावकोचिंत्यप्रांनजा

नविमलग्यानदृगप्रांनां॥दौलकौंनसुखजोंनलह्यौंतिनक

ह्यौंशोनरसपांनां॥धनिमुनि०॥३॥ इति:॥पुनिसोरठि॥धनि

मुनिजिनिकीलगीलौंशिवश्रोरन॥टेकसंम्यकदरशनग्यान

॥पद०॥
॥३६॥

लिहिपड़ी ॥ नि०॥४॥ इति: ॥पुन॥ अपनीसुधिभूलिआप
आपदुखउपायौ ॥ ज्यौंसुकनभचालविसरिनलनीलटका
यौं ॥ अपनी ॥ टेक ॥ चेतनअविरुधसुद्धदरसबोधमयवि
सुद्धतजिजडरसफरसरूपपुद्गलअपनायौ ॥ अ०॥१॥ इं
द्रीयसुखदुखमैंनितपागिरागरुखमैंचितदायकभवविपतिवं
धबंधकौंवढायौ ॥ अ०॥२॥ चाहदाहदाहैत्यागेनताहिंचाहैं
समतासुधानगाहैंजिनिकरजैयौंवतायौ ॥ अ०॥३॥ मानु
षभवसुकलपायजिनवरशासनलहाय ॥ दौंऊनिजस्व
भावभजिअनादिजोनध्यायौ ॥ अ०॥४॥ इति: ॥पद॥
शांतिमूरतिजगसुखदाई ऐमनभाईयांकी ॥ टेक ॥ सुभकोष
तीआईअवमेरैंमगमहरषितनुमगुणगाई ॥ जीमन०

हिकैं नेहु लगायौ॥ सौ सौ०॥३॥ क्यौ न तजैं भ्रम याषसमां हृतजो
नितसंतु सुहायौरे॥ सौ सौ०॥४॥ अबहु समजि कठिन यह नरभव जिन
वृष बिना गमायौ॥ सौ सौं॥५॥ नि विलखैं मणि डारितै उदधि
मैं दौलत न कौ पछितायौं॥ सौ सौ०॥६॥ ड्रि:॥ पद॥ नि
रखत जिनचंद्रवदन सुपद सुलचि आई॥ टेक भगवी निजअ
निकी पिछानि ग्यान भांनकी कलाउद्योत होन काम या मि
नी विलाई॥ नि०॥१॥ स्वामित आनंद स्वाद पायौं विनसे
वियाद आंन मैं अनिष्ट इष्ट कल्पनां नसाई॥ नि०॥२॥
साधी निज साध्य की समाधि मोह व्याधि की उपाधि कूं वि
राधिकें आराधनां सुहाई॥ नि०॥३॥ धनि दिन छिण आज
सुगुण चिंते जिनराज अबै सुधरे सब काज दौलत अचल

॥पद८०॥ फा॥ मन०॥ टेक॥ आगदेवमेंसहीवेवे उनिकेसेयेसें कहेकौंननफ
२४॥ म०॥१॥ मुद्रानग्नसोनासपोषत देषतहींकरहेतवफा॥ मनगुस
गपायअवजानीसबसुषकेउसुदायकमेंहू:। चेतनियेंबुधिकौंन
टेजिनिकेध्यायेंसेंविधिहोनसफा॥ मन०॥ ६ हू:॥
कहतसु स्यामी कहीसीषगुरु हिनेसीमनमानी टेक कठिनकाकनाली
ज्यौंपायौं॥ नरभवसुकलअवरा जिणवानी॥ चेत०॥१॥ भूमि
नहोयचांदनीकी ज्यौं॥ त्यौंनहिंधरीगेयकौंग्यानी॥ वस्तुरूपयें
तूयौंहीसदहकीरयकातसौंज विरानी॥ चे०॥२॥ ग्यानहीहोय
अग्यानरागरूसकरि निजसहजस्वरूपनाहानी॥ इंद्रीजड
तिनविषयअचेतनतहां अनिष्टइष्टताठांनी॥ चेतन०॥३॥
चाहैसुखदुखहीअवगाहें॥ अबसुनिविधिजोहैंसुखदांनी
दौलत आपकरि आपआपमें॥ ध्यायलायलयसमरससांनी०

३७

नाथनिहारौंतुमगुरागनैंनाकंठनिपलकरेहपाइ॥ अवैंनिसैंहीरे
हिरिलधारोंहोतनाकलहीमरणचाही॥जीमनन०॥२॥इ:॥पुन
गुरुवेहमारावकअवलोकैं हैंजीगुरपूराभींना॥टेक सवेंत्यागि
वणवंनेथानविराजेरागदोषकरिहींना॥हैंजी०॥१॥द्वाविंसतजे
सहैंपरीस्या॥पमैंशांनिरसलीना॥सोहोममदिलवसौंजीनिरंत
रनाररणतरनयरवींना॥हैंगु०॥इति:॥पुन॥आजमैंपरमपद
रथपायौं॥प्रभुचरननिचितलगायौं॥आज०॥टेक॥असुभ
गयेंसुभपगटभयेहैं॥सहजकलपतरुपायौं॥आ०॥२॥गा
रणसक्तितपऐसीजाकीचेतनपददरसायौं अष्टकर्मरिपु
जोधाजीतेशिवअंकुरजमायौं॥आ०॥इति:॥मनरौंमादि
याहोतुजिनवरमैंडामोहिनिभारणजगदीवानैंसैदिलहोनक

पद०४ हितहेतुयहीरें चे०॥४॥ दौंलतजिनपद्दसीवधरीउर॥ निजिभव
२८ सहजलहीरे॰॥चेतन॥५॥ इति:॥ ॥२॥ कैंसागपारगथारीरे॥ आ
पानपिसारोंतूकेंग्र्या०॥टेक॥ देहस्थितकरिक्रीया आपकूं
माननशिवमगचारीरें॥ आपा०॥१॥ निजनिर्वेदविनयोरप
सीहविफलकहीजिनसारीरें॥२॥ शिवचौहैतौंदुविधकर्मे
नैं॥ लखिनिजपरनतिन्यारीरे॥ आ०॥३॥ दौंलतजिननिज०
भावपिसानैं॥ निजिभखिविवियतिविहरीरें॥ आपा०॥४॥
इति:॥२५॥ अथ राग काडीदौंलतिरांमकृतलिख्य
ते:॥ वृषभादिंजिनेसरध्याऊं॥ सारद अंबाचितल्याऊं॥ दि
विधापरिग्रहपरिहारी॥ गुरुनमोंसुपरहितकारी॥ छंद हि
तकारनारक देवसुनगुरुपरखिनिजउरल्याइयें॥ दुखदाय

ढि: ५२॥ जिनमुखचंद निरखि सुख पायौ॥ टेक मोहमहातम
नास भयौ है उर अंबुज प्रफुलायौ ताप नस्यौ मौ तरषि आ
नंद निरखि॥१॥ चकवौ कुमति विछुरि अति विलखै आतम
सुधा श्रवायौ॥ सिथल भये सब विधिगण फंद॥ निर॰ २
विकट भवोदधि कौ तट निकस्यौ अघतरमूल नसायौ
दास लह्यौ अब स्वपर सुछंद॥ निरखि॰॥३॥ ढि: ॥ जगत
मौ भोटी॥ चेतन कौन अनीति गही रे॥ मानैं न सुगुरु कही रे
चे॰॥ टेक॥ जिन विषयन वस बहु दुख पायौ॥ तिनिसौं प्रीति
न हीरे॥ चेतन॰॥१॥ चिन्मय है देहादि जडन सौं॥ सो मति
पागि रही रे॥ चे॰॥२॥ सम्यक दर्शन ग्यान भाव निज तिनि
कौं गहत न हीरे॥ चे॰॥३॥ जिनवृष पाय विहाय रागरूप निज

प२०॥ तीनपावकदससहसतनकुमिमिनांतसुमीरकी ॥ विनमातसुसमदे

३ली॥ हधारी ॥ यानयुतनुतनतनुलख्यौं ॥ नहांपनन नापनकजलनव्यं

जनहेरदमेरनतुयसहयौं ॥ ३ ॥ संखादिदुइंद्री आनी ॥ थिति

द्वादसवरषेवषानी ॥ जूंकादिनेइंद्रीहैतें ॥ वासउनंचासजी

यैतें ॥ जीवेंवसुदरहनमंतीजमुषव्यालीससहसउरगतनी

थगकीवहत्तरीसहसनवपूर्वांगश्रीलपकीभरीं ॥ नरमलसमू

वेकोटिकीथितिकर्मभूमिवषानीमैं ॥ जरलचुरविकल

विनभोगभूनरपसुत्रयपल्यप्रमानीयैं ॥ ४ ॥ भवनवासिकीरन

केवसेरा ॥ भुगत्यानहोकष्टघनेरा ॥ सेहैतिनतिनतननसार

सेयैदूहपूतिमफारा ॥ संजारवजानलपचोवेंधौरेंधौंतीन

पैरें ॥ शीचैंषारेंषारसोंहुठकहैंवूरगनीकैंकौरें ॥ वैतरनिस

कुपथविहायशिवसुखदायजिनवृषध्याइयैं॥जिहतैंकुम
गपगिमोहठगकरिठग्यौंभवकाननिफिरयौं॥आनीसद्गुरु
लवजैयौंनिमैंजरमरनजामनदहौंजस्यौं॥१॥चाल॥मोहादि
पुद्गलपरधुंमरिया॥तिसवसनिगोदमैंपरिया॥तहांस्वासएक
केमांहीं॥अष्टादशमरणलहांहीं॥तहिमरनअनंतमहूर्तमें
छ्यासठिसहससततीनहीं॥छतीसकातनअनंतयौंदुख
सहेत्यमांहीनहीं॥कबहूंलहीवरआयुछितिजलपवनपाव
कतरुतनकी॥तसुभेदकिंचितकहूंसोमुनिकह्योंजोगौत
मगनी॥२॥छंद॥पृथ्वीदोभेदवखानां॥मृदुमाटीकठिन
पाषानं॥मृदुद्वादशसहसवरसकी॥पाहनबाईससहसकी
फुनिसहससातकहीउदकत्रयसहससहीसमीरकी॥दिन

१६०
४०

किंबहु विललालफुल्दुःख कलिनकोउपरेलो ॥ ७ ॥ बुढ़ापणाके दुख
जेते ॥ लखौ अंसबनैं लगितेते ॥ सुख लाल वहसलहा लैं ॥ विलस
ति लवसलुस भारैं ॥ लसें आउ जाकें देहकी तैं कहौ बुध
कौ काकथा ॥ लवहीं अुया लुकजमगहड्डिमम्बअजन्मगवू ॥
थो ॥ काहू जन्म सुभलालि किंचित लहैंयौ पदस्थनदेनकौं ॥ अ
नियोग किति विषनास पायें सह्यौ दुख पर सेवकौं ॥ ८ ॥
नेहोरे षिमहल सुरी ह्वी ऊलौं करि विषयन गृद्धीं ॥ कबहुं परि
वारन सां नौं ॥ सोकाकुलछैं विललानौं ॥ विलखायअ
तिजव मरन निकटें नौं सह्यौ संकट मानसौ ॥ सुरविभव
दुखद लगी जवैं नवलखी मालमलानसौ ॥ नवसुतुरसु
भउपदेस देसम म्हाइयो समझ्यौं न क्यौं ॥ मिथ्या वेजुत

गेरासमलजलअतिदुखदनरकसैंवलनसौं।अतिभीमबलैन
असिकौंतसमरुलगतदुखदैनैयनै॥भू॥तिलबूंदमहिम
गरमाही।मेरुसमलहूसगलजाही।नहींपिवनिसिंधुनलीहैंयौं
दुखसहनकेअवनीहैं।अवनीतहांकौतैंनिकरिकबहुजन्म
पायौनरगेसर्वांगसकुचितअतिअपावनजठरजननीकेप॰
र्‍यौं।तहांअथोमुखजननीरससौंसबकीजीयौंनवमाससौं
तापीरमेंकोहूसीरनाहींसहैआपनिकासतैं॥६॥जनमतजे
संकटपरे।तासौंतैंजातनगाये।लहिबालपनैंदुखभा
री।तरुनापोलयौंदुखकारी।दुखकारइष्टवियोगअशुभसं
योगसोगसरोगता।परसेवग्रीषमसीतपावससहैदुखअति
भोगता।काहुनतियकाहुकुबांधवकाहुसुतदुख्यारिनी।कि

॥१२७॥
॥७२॥

निस्वरूपचिपरविचिसनयुक्तसीषचितत्रधरयही ॥ ॥ इतिसंपु
र्ण ॥ श्रीवीतरागायनमः ॥ अथदौलतिरामकृतछहढाला लि
ष्यते ॥ सोरठा ॥ तीनभुवनमैंसार ॥ वीतरागविज्ञानता ॥ शिव ग
स्वरूपशिवकार ॥ नमोंत्रियोगसम्हारिकैं ॥ चौपई ॥ जेत्रि
भुवनमैंजीवअनंत सुषचाहैंदुषतैंभयवंत ॥ तातैंदुष
हारिसुषकार ॥ कहैंसीषगुरुकरुणाधार ॥१॥ ताहिसुनोभ
विमनथिरआन ॥ जोंचाहोंअपनोंकल्याण मोहम
हामदपीयोअनादि ॥ भूलिआपकौंभरमतवादि ॥२॥
तासभ्रमनकीहैबहुकथा ॥ पैंकछुकहौंकहीमुनिज
था ॥ कालअनंतनिगोदमझार ॥ बीत्योएकेंद्रियतन
धार ॥३॥ एकस्वासमैंअठदसबार ॥ जन्म्योमर्योभर्यो

युन कुगति पाइकै है फिर सो त्यौ पद ज्यौं ॥रि॥ यौं चिर भवा
रवी गाहीं ॥ किंचित साता न लहाहीं ॥ जिन कथित धर्म नहीं
जान्यौं ॥ पर मैं आपनपौ मानैं ॥ मान्यौं न संम्यक त्रय आत्मक
आतम अनातम मैं पग्यौं ॥ मिथ्या चरन दृग ज्ञान रंज्यौं जा
य नव ग्रीवा वस्यौं ॥ पै लहौ न हि जिन कथित शिवमग व
थां भ्रम भ्रम्यौं जिया ॥ चिद भाव के दरशाव बिन सब गये अहले
न पकीया ॥२०॥ अब अद्भुत पुन्य उपायौ ॥ कुल जात बिमल
तूं आयौं ॥ यातैं सुनि सिष्य सयानैं ॥ विषीयनि सौं रति मति निब
नैं ॥ ठानैं कहा रति विषयसौं ऐ विषम विषधर सम लख्यौं ॥
यह देह मरन अनंत इनि कौं त्याग आतम रस चख्यौं ॥ या
रस रसिक जन बसे शिव अब बसैं पुनि बसि हैं सही ॥ दौलत

॥छ०॥
॥४२॥

कलित देह दाहिनी ॥९॥ सैंवलतरुजुत दल असिपत्र ॥ अ
सिज्यों देह विदारैं तत्र ॥ मेरुसमान लोह गलि जाहि ॥ ऐ
सीसीत उसनता थाय ॥१०॥ तिलतिल करैं देहके षंड ॥ अ
सुर भिडावैं दुष्ट प्रचंड ॥ सिंधुनीरतैं प्यास न जाय ॥ मिलै न बूं
द रहै अतिकाय ॥११॥ तीन लोककौ नाज जु षात ॥ मिटै
न भूंष कण्या न लहात ॥ ये दुष वहु सागर लौं सहै ॥ कर्मजोग
तैं नरगति लहैं ॥१२॥ जननी उदर वस्यौ नवमास ॥ अंगस
कुचतैं पाई त्रास ॥ निकसत ये दुष पाए घोर ॥ तिनिकूं क
हत आवै ओर ॥१३॥ बालपनैं मैं ग्यान न लह्यौ ॥ तरुणस
मैं तरुणीरत रह्यौ ॥ अर्धमृतक सम बूढापनौं ॥ कैसें रूप ल
षै आपनौं ॥१४॥ कभी अकाम निर्जरा करैं ॥ भवनत्रि

दुखभार। निकसि भूमि जल पावक भयौ। पवन प्रत्येक वना
स्पति थयौ॥४॥ दुर्लभ लहि ज्यौं चिंतामणी। त्यौं परजाय लही
त्रसतनी। लट पिपील अलि आदि सरीर। धरि धरि मर्यौ
सही बहु पीर॥५॥ कबहूं पंचेंद्रीय पशु भयौ। मन विन नि
पट अज्ञानी थयौ। सिंघादिक सैनी ह्वै क्रूर। निबल पशु ह
ति खाये भूर॥६॥ कबहूं आप भयौ बलहीन। सबलनि करि
खाये अतिदीन। छेदन भेदन भूख पियास। भार वहन हि
म आतप त्रास॥७॥ बध बंधन आदिक दुख घने। को
टि जीभतैं जात न भनै। अति संक्लेस भावतैं मर्यौ। घोर
श्वभ्र सागर मैं पर्यौ॥८॥ तहां भूमि परसत दुख इसौ। वीछू सह
सडसैं नहि तिसौ। तहां राधि श्रोणित वाहिनी। कृमिकुल

छ॰ ढा॰ ४२

कमैं सुरतरा थैरें विषय चाह दावानल दह्यौ मरत विलाप कर
त दुख सह्यौ १५ जो विमानवासी हू थाय सम्यग्दरशन वि
न दुख पाय तांहां तैं चय थावर तन धरै यौं परिवर्तन पूरे
करै १६ इति॥ अथ दुजी ढाल॥ पद्धरी छंद॥ ऐसैं मिथ्या दृ
ग ग्यान चरन वसि भ्रमत भरत दुख जन्म मरन तातैं इनि
कूं तजीऐ सुजान सुनि तिनि संखेप कहूं बखानि १ जीवा
दि प्रयोजन भूत तत्त्व सरधै तिन मांहि विपर्ययत्व चेतन
कौ है उपयोग रूप चिनमूरत विनमूरत अनूप २ पुद्ग
ल नभ धर्म अधर्म काल इनि तैं न्यारी है जीव चाल ता
कूं न जांन विपरीत मांनि करि करै देह मैं निज पिछांनि
३ मैं सुखी दुखी मैं रंक राव मेरौ धन गृह गोधन प्रभाव

॥ घ० ॥
॥ ४२ ॥

मैंसुतनीयमैंसवलतीन वेलपशुभगमूखंडवीन ॥ ६ ॥ नजनप
जनतपनीतपजजांनि ॥ ननननत आपकौंनांसमांनि ॥ रा
गादिषग ईंट ऐहुवः देंन ॥ तिनिहीकूंसेवतगिनैचैंन ॥
मूलुमअसुभवंधके फलमफार ॥ तिअनकरी निज
पदविसारि ॥ आतमहितहेतविरागग्यान ॥ ते लखेआपकू
कष्टदान ॥ हि ॥ रोकीनचाहनिजसक्तिषोय ॥ शिवरूपनि
राकुलतानजोय ॥ याहीप्रतीतिजुतजोकछुग्यान ॥ सो
दुषदहेअग्यानजांन ॥ ७ ॥ इनिजुतविषयनिकोजो
सवनि ॥ ताकौजान्यौंमिथ्याचरित ॥ यौमिथ्यात्वादि
निसर्गऐह ॥ अवजेग्रहीतसुनीयैंजुतेह ॥ जोकुगुरुकुदे
वकुधर्मसेव ॥ पोषेंचिरदरशनमोहएव ॥ ८ ॥ अंतर

॥छ०॥ ॥४४॥ तातमके अनहित जेते करनी तन करनसौंन तेसब मिथ्या

चारित्र त्यागि ॥ अब आतम के हित पंथ लागि ॥ १४ ॥ इति

अथ तीजी ढाल चाल जोगीरासाकी ॥ आतम कौं हित है

सुख सो सुख आकुलता बिन कहीये ॥ आकुलता शिव मांहि ल

न तातैं शिवमग लाग्यौ चहियैं सम्यक् दरशण ज्ञान च

रन शिवमग सो दुविधि विचारौं ॥ जो सत्यारथ रूप सो निश्चै

कारन सो विवहारौं ॥ १ ॥ परद्रव्यनितैं भिन्न आपमैं रुचि सं

म्यक्त भलो है ॥ आपरूप कौं जानपनौं सो सम्यक ज्ञान क

ला है ॥ आपरूपमैं लीन रहै थिर सम्यक चारित्र सोई ॥ अ

ब व्यौहार मोषमग सुनीयै हेतु नीयति कौं होई ॥ २ ॥ जीव

अजीव तत्व अरु आश्रव बंध रु संवर जानौं ॥ निर्जे

रागादिक धौरें जेह । बाहिर धन अंबर तैं सनेह । धारें कुलिंग लह
हि महंत भाव । ते कुगुरु जन्म जल उपल नाव ।। जे राग
दोष मल करि मलीन । वनिता गदादि जुत चिह्न हीन । ते
हैं कुदेव तिनि की जु सेव । सठ करत न तिन भव भ्रमन छे
व ॥२०॥ रागादि भाव हिंसा समेत । दरवित त्रस थावर म
रण खेत । जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म । तिन सर्धै जीव ल
हैं अशर्म ॥२१॥ याकूं गृहीत मिथ्यात्व जान । अब सुनि गृ
हीत जो है अज्ञान । एकांतवाद दूषित समस्त । विषया
दिक पोषक अप्रसस्त ॥२२॥ कपिलादि रचित श्रुत कौं
अभ्यास । सो है कुबोध बहु दैंन त्रास । जे ख्याति लाभ पूज
दि चाह । धरि करत विविध विध देह दाह ॥२३॥ आतम अ

॥६०॥ गैसमैं अनंता ॥ वहिरातमता हे अजानितजि अंतरआतमहूजे
॥४५॥ परमातमकूं ध्याय निरंतर ज्यौं निज आनंदपूजैं ॥५॥ चेतन
ताविनसो अजीवहैं पंचभेदताकेहैं ॥ पुद्गलपंचवरनर
सपनगंधदुफरसवसुजाकेहैं ॥ जीयपुद्गलकूं चलनसहा
ईधर्मद्रव्यअनरूपी ॥ तिष्टतहोइसहाइ अधर्मजिन
विनमूर्तिनिरूपी ॥६॥ सकलद्रव्यकौं वासजासमैं सो आका
सपिछानौं ॥ नीयतवरतनानिसदिनसो व्यौहारकाल
परमानौं ॥ यौं अजीव अब आस्रवसुनीयें मनवचकाय
अयोगा ॥ मिथ्या अविरत अरकषायपरमादसहित उ
पयोगा ॥७॥ ये ही आतमकूं दुषकारन तातैं इनिकूंत
जीऐं ॥ जीवप्रदेशबंधेविधिसौं सो बंधनकबहूं सजियै
धि

मोक्षकहे जिनतिनकों ज्योंकौंत्योंसरधानों हैं सोई समकित
व्योंहारी अवइनरूपवखानों तिनिकूं सुनिसामांन्यविसे
षेंत्रिविधतीनउरआंनों ॥३ वहिरातम अंतरआतम परम
तमजीवत्रिधाहैं देहजीवकूं येकगिनेंवहिरातमतत्वमुधा
हैं उत्तममध्यमजघनित्रिविधिके अंतरआतमग्यांनी
दुविधसंगविनसुधिउपयोगीमुनिउत्तमनिजध्यांनी ॥४
मध्यमअंतरआतमहैं जेदेसव्रती आगारी जघनिकहे अ
विरितसमदृष्टीतीनोंशिवमगचारी सकलनिकलिपर
मातमद्वैविधतिनिमैंघातिनिवारी श्रीअरहंतसकल
परमांतमलोकालोकनिहारी ज्ञांनसरीरीत्रिविधिकर्म
मलवरजितसिद्धमहंता तेहैंनिकलअमलपरमातमभो

छ०
८७

ही जुगपतिहोतैंभीप्रकासदीपकतैंहोइ २ तासमेंद्वैहैंपरोक्ष
मतिश्रुतिनमांही मतिश्रुतदोयपरोक्ष अक्षमनतैंउपजाहीं
अवधिग्यानमनपर्ययदोहैदेसप्रतक्षा द्रव्यक्षेत्रपरमान
लीयैंजानैंजियस्वक्षा ३ सकलद्रव्यकेगुनअनंतपर्जाय
नंता जानैएकैंकालप्रगटकेवलभगवंता ग्यानसमाननन
आंनजगतमैंसुषकौंकारन इहपरमामृतजनमजरामृतु
रोगनिवारन कोटिजन्मतपतैंग्यानविनकर्मझरैंजे ज्ञानीकै
छिनमैंत्रगुपितैंसहजटरैंते मुनिव्रतधारिअनंतवारग्रीवक
उपजायौ पैनिजआतमग्यानविनासुषलेशनपायौ ४
तातैंजिनवरकथिततत्वअभ्यासकरीजै संसयविभ्रममोह
त्यागिआपोंलषिलीजै यहमनुष्यपर्जायसुकुलसुनिवौं

भकमलहैं॥ नगरनारिकौं प्यारजथाकादैमैंहेम अमलहैं॥ १५॥
प्रथमनरकबिनषटभूजोतिषवानभवनसबनारी॥ थावर
विकलत्रयपसुमेंनहिंउपजनसंम्यकधारी॥ तींनलोकतिंहु
कालमाहिंनहिंदरसनसौंसुषकारी॥ सकलधर्मकौमूल
यहीइसबिनकरनीदुष:कारी॥ मोषमहलकीप्रथमसि
ढीहैं॥ याबिनग्यानचरित्रा॥ संम्यकताणलैहैंसोदरस
नधारौभव्यपवित्रा:॥१६॥ इति॥ अथचतुर्थीढाल॥ दोहा
संम्यकश्रद्धाधारिपुनि॥ सेवहुसंम्यकग्यांन॥ स्वपरअर्थबहु
धर्मजुतसोजगटावनभांन॥१॥ चाल॥ अहोजगतगुरुकी:॥
संम्यकसाथैग्यानहोयपैभिंनअराधौ॥ लक्षणश्रद्धाजान
दुहुमैंभेदअबाधौ॥ संम्यककारनजानग्यानकारजहैंसो

कोंत्यांवृथाथावरनसंघारैं ॥ वैरवधकारकठोरनिंद्यनहिवैनउ
चारैं ॥ जलमृतकाविनऔरनहींकछुगहैअदत्ता ॥ निजवनि
ताविनसकलनारिसौंरहैविरत्ता ॥ अपनीसक्तिविचा
रिपरिग्रहथोरोराखैं ॥ दसदिसिगमनप्रमाणठानितसुसीम
ननखैं ॥ १० ॥ ताहूमैंफिरिग्रामगलीगृहवागवजारा ॥ गमना
गमनप्रमानठानिअनिसकलनिवारा ॥ काहूकैधनहानि
किसीजयहारिनचीतैं ॥ देयनसोउपदेसहोयअघवनिज
कृषीं ॥ ११ ॥ करप्रमादजलभूमिवृक्षपावकनिविराधैं
असिधनुहलहिंसोपकरणनहींदेजसलाधैं ॥ रागदोषकर
तारकथाकवहूंनसुनीजैं ॥ औरहुअनरथदंडहेतुअघति
हैंनकीजैं ॥ १२ ॥ धरिउरसमताभावसदासामायककरियै

जिनवांनी ॥ यह विधि गयें न मिलैं सुमनि ज्यौं उदधि समांनी ॥ धन
समाज गज बाज राज तौ काज न आवें ॥ ग्यान आपकौं रूप भये
फिरि अचल रहावें ॥ तास ग्यान कौं कारन स्वपरविवेक बखानें ॥
कोटि उपाय बनाय भव्य ताकौं उर आंनौं ॥ जे पूरब सिव
गहि अब आगें जैहैं ॥ सो सब महिमा ग्यांन तनी मुनिनाथ कहैं
हैं ॥ विषय चाह दव दाह जगत जन अरनि दझावें ॥ तास उपा
य न आन ग्यान घनघांन बुझावें ॥ ७ ॥ पुन्यपाप फल मांहि हरष वि
लखौं मति भाई ॥ यह पुद्गल परजाय उपजि विनसैं थिर थाई ॥ ला
ख बात की बात यहै निश्चय उर आंवौं ॥ तोरि सकल जग दंद फं
द नित आतम ध्यावौं ॥ ८ ॥ संम्यक ग्यानी होइ बहुरि दिढ चारि
त्र लीजे ॥ ऐकदेस अरु सकलदेस तसु भेद कहीजे ॥ ता सा

॥छ॰॥
॥४६॥

गुन ढांकैं वा निज धर्म बढावैं ॥ कामादिक करि वृषतैं चिगतैं निज
पर कौं सु दिढावैं ॥ धर्मीसौं गऊवछप्रीति सम करि जिनधर्म
दिपावैं ॥ इनि गुणतैं विपरीत दोष वसु तिनिकौं सतत खि
पावैं ॥ पिता भूप वा मातुल नृप जो होय न तौ मद ठानैं ॥ मद न
रूपकौ मद न ग्यानकौं धन बलकौं मद भानैं ॥१३॥ तपकौं
मद न मद न प्रभुताकौं करै न सो निज जानैं ॥ मद धारै तौ ये
हि दोष वसु संम्यक कूं मल ठानैं ॥ कुगुरु कुदेव कुवृष सेव
ककी नहीं प्रशंस उचरै है ॥ जिनमुनि जिनश्रुत विन
कुगुरादिक तिन्हैं न नमन करै है ॥१४॥ दोषरहित गुणसहि
त सुधी जे संम्यक दरश सजै हैं ॥ चरितमोहवसि लेश न सं
यम पै सुरनाथ जजै हैं ॥ गेही पै गृह मैं न रचै ज्यौं जलमैं भिं

समदमतैंजोकर्मनआवैंसोसंवरआदरीयैं॥तपबलतैंविधिझरन
निर्जरताहिसदांआचरीयैं॥८॥सकलकर्मतैंरहितअवस्था
सोशिवथिरसुखकारी॥इहिविधिजोसरधातत्वनिकीसोस
मकितविवहारी॥देवजिनेंद्रगुरुपरिग्रहविनधर्मदया
जुतसारौं॥याहूमानिसमकितिकौंकारनअष्टअंगजुत
धारौं॥९॥वसुमदटारिनिवारित्रसठताखटअनायतनत्या
गौं॥संकादिकवसुदोषविनासंवेगादिकचितपागौं॥अ
ष्टअंगअरदोषपचीसौंअवसंक्षेपैंकहियैं॥विनजानैं
तैंदोषगुननकौंकैसैंतजीयैंगहीयैं॥१०॥जिनवचमैंसं
कनधारिवृषभवसुखवांछाभानैं॥मुनितनमलिनदे
खिनघिनावैंतत्वकुतत्वपिछानैं॥निजगुनअरपरऔ

छ० ८ली

सुरअसुरखगाधिपजेते मृगज्योंहरिकालदलेते अशरणमअजं
नबहुहोई मरतेंनबचावेंकोई चहुंगतिदुखजीवभरैंहें परि
वर्त्तनपंचकरैंहें सबविधिसंसारअसार जामेंसुखनांहिल
गार सुभअसुभकर्मफलजेते भोगैंजीयएकैंतेते सुतदा
राहोंयनसीरी सबस्वारथकेहैंभीरी जलपयज्योंजियतनमे
ला पैभिन्नभिन्ननहींभेला तोप्रगटजुदेधनधामा क्यों
ह्वैंइकमिलिसुतरामा पलरुधिरराधिमलथैंली कीक
सवसादितैमेंली नवद्वारबहैंघिनकारी यहदेहकरैंकि
मयारी जोजोगनकीचलिताई तातेंहोयआस्रवभा
ई आस्रवदुखकारघनेरे बुद्धवंतनतिन्हेंनिवेरें
जिणपुंण्यपापनहींकींन्हा आतमअनुभवचितदीना

पर्वचतुष्टयमांहिपापतजिप्रोषधधरीयेः।भोगश्रौरउप
भोगनियमकरिममतनिवारैं।मुनिकौंभोजनदीयेः
फेरिनिजकौंअहारैं।१३।बारहव्रतकेअतीचारपन
पननलगावै।मरनसमयसंन्यासधारितसुदोषनशा
वै।यौंश्रावकव्रतपालिस्वर्गसोलमउपजावै।तहांतैं
चयनरजन्मपायमुनिह्वैशिवपावैः।१४।इति।श्र
थपंचमीढाल।छंदचाल।मुनिसकलव्रतीवडभागी
भवभोगनितैंवैरागी।वैराग्यउपावनमाई।चिंतवोश्रनु
प्रेक्षाभाई।१।इनिचिंततसमसुखजागे।जिमज्वलन
पवनकेलागे।जोवनधनगोधननारी।हयगजजनआज्ञा
कारी।२।इंद्रियभोगछिनथाई।सुरधनुचपलाचपलाई

छ० ५३

सताधरन दि॰ पनतैं द्वादसधैरें षटदसतंनत्रय सेवैं सदा ॥ मु
निसाथमैं वा एक विचरैं चहैं नहीं भवसुख कदा ॥ यों है सकल
संयमचरित सुनीयैं स्वरूपाचरन अब ॥ जिस होत प्रगटैं आ
पनी निधि मिटैं परकी प्रवृति सब ॥७॥ जिन परम पैनी सु
बुधि छैनी डार अंतर भेदिया ॥ वरणादि अर रागादितैं नि
जभावकूं न्यारा कीया ॥ निजमांहि निजकेहेतु निजकर
आपकूं आपैं गह्यौ ॥ गुणगुणी ग्याता ज्ञान गेय मझार
कछु भेद न रह्यौं ॥८॥ जहां ध्यान ध्याता ध्येयकौं न विकल्प
वच भेद न जहां ॥ चिद भाव करम चिदेश करता चेतना
किरिया जहां ॥ तीनौं अभिन्न अखिन्न सुध उपयोग
की निश्चल दशा ॥ प्रगटी जहां दृग ग्यान व्रत ए तीनधा

प्रकारनिरोधमनवचकायआतमध्यावते ॥ तिनसुथिरमु
द्रादेखिमृगगणनितउपलखाजखुजावते ॥ रसरूपगंधतथा
फरसअरुसबदसुभअसुहावने ॥ तिनमैंनरागविरोधपंचे
द्रियजयनपदपावने ॥४॥ समतासम्हारैंथुतिउचारैंवं
दनाजिनदेवकूं ॥ नितकरैंश्रुतरतिकरैंप्रतिक्रमतजैंतन
अहमेवकूं ॥ जिनिकैंनन्हौननदंतधोवनलेशअंब
रआवरण ॥ भूमाहिपिछलीरैनमैंकछुसैनएका
सनकरण ॥५॥ इकबारदिनमैंलैंअहारखडेअलपनि
जपानमैं ॥ कचलौंचकरतनडरतपरिसहसौंलगेनि
जध्यानमैं ॥ अरिमित्रमहलमसानकंचनकांचनिंद
नथुतिकरन ॥ अर्घावतारनअसिप्रहारनमैंसदास

॥ छ० ॥ ताथानथितीटैंगये ८ वसुकर्मविनसैं सुगुनवसु ८ अविकार
॥५२॥ अकल अरूप सुच चिद्रूप अविनासी ध्येय ॥१२॥ निजमां
हि लोक अलोक गुन परजाय प्रतिबिंबत थये रहिहैं अ
नंतानंत काल जथा तथा शिव परिणये ॥ धन धन्य हैं जे
जीव नर भव पाय यह कारिज कीया ॥ तिनहीं अनादि
भ्रमन पंच प्रकार तजि वर सुख लीया ॥१४॥ मुख्योप
चार दु भेद यों बडभाग रत्नत्रय धरैं ॥ अरु धरेंगे ते शिव
लहैं तिन सुजस जल जग मल हरैं ॥ इम जांनि आल
स हांनि साहस ठांनि यह शिख आदरौ ॥ जबलौं न
रोग जरा गहै तबलौं झिंगित निज हित करौं ॥१५॥
यह राग आग दहै सदा तातें समामृत सेयीये ॥ चिर भजे वि

ऐकै लसा ॥१०॥ परमान नय निसेप कौं न उद्दोत अनुभव
मैं दिखै ॥ दृग ग्यान सुख बल मैं सदा नहीं आन भाव जु
मो विखै ॥ मैं साध साधक मैं अबाधक कर्म अर तसु फल
नतैं ॥ चित पिंड चंड अखंड सुगुण करंड च्युत पुनि कलनि
तैं ॥११॥ यौं चिंत्य निज मैं थिर भऐ तिन अकथ जो
आनंद लह्यौ ॥ सो इंद्र नाग नरेंद्र वा अहमिंद्र कै ना
हीं कह्यौ ॥ तब ही सुकल ध्यानाग्नि करि चउ घाति विधि
कानन दह्यौ ॥ सब लख्यौ केवल ग्यान करि भवि लोक
कूं शिवमग कह्यौ ॥१२॥ पुनि घाति सेष अघाति
विधि छिन मांहि अष्टम भू वसें ॥ वसु कर्म विनसें सुगु
न वसु सम्यक्त आदिक सब लसैं ॥ संसार खार अपार

॥अ०९॥ ॥५३॥ धर्मरूपा॥ दर्शनपुनसर्वेनिहारा॥ आनंदअतेंद्रीयराजैं॥
वलअतुलस्वरूपनत्याजैं॥ इत्यादिकसुगुणअनंता॥
अंतरलक्ष्मीभगवंता॥ वाहिजविभूतवहुसोहैं॥ वसनस
मथैकविकोहैं॥४॥ तुमवृक्षअसोकसुस्वक्ष॥ सवसोक
हरनकौंदक्ष॥ नहांचंचरीकगुंजौरें॥ मानौंतुमस्तोत्रउच्चा
रैं॥५॥ तुमरत्नमयूखविचित्र॥ सिंघासनसोंअपवित्र॥ तहं
वीतरागस्वविसौहैं॥ तुमअंतरीक्षमनमोहैं॥६॥ वरकुंदइंदु
अवदात॥ चामरवज्रसवैसुहात॥ तुमऊपरमघवाढौरैं॥ धरि
भक्तिभावअघटौरैं॥७॥ मुक्ताफलमालसमेत॥ तुमऊ
र्द्धंछत्रत्रयस्वेत॥ मानौंतारान्वितचंद॥ त्रयमूर्तिधरीद्युति
वृंद॥८॥ सुभदिव्यपटहवहुवाजैं॥ अतिसव्वजुतअधिकवि

षट्कआयुआवतैं त्यागनिजपदसैहैं ॥ कहूंथ्यौंपरपदमैं
नतैंपदयहैं क्यौं दुःखसहैं ॥ भवदौं लहौसुखीस्वपदरवि
दावमतिचूकौंयहैं ॥ इकनवववसुइकवर्षकीतीजसु
कलवैसाख ॥ कह्यौतत्वउपदेशयह ॥ लखिबुधिजनभा
ष ॥ लघुधीतथांपमांदतैं ॥ सदअर्थकीभूलि सुधीसु
धारिपढौसदां ॥ ज्यौंपावौंभवकूल ॥ ७६ ॥ इतिछहढा
लौंसंपूर्णः ॥ श्री ॥ अथ भागचंदकृतसुस्तुतिलिख्य
ते दोहा ॥ शिवभाववध्यायीतदपिएकविमलचिद्रूप ज्ञा
नानंदमयीसदा ॥ जयवंतौजिणभूप ॥ १ ॥ छंद चाल ॥
सकलज्ञेयज्ञायकतदपिहु ॥ देखततुमकौंजिनचंद्र ॥ ममतन
ममसीतलहोय ॥ इमिजलसींचतजेम ॥ २ ॥ तुमबोधअबो

लागौं अनादिविधिसंग ना निमित्तपायदुखपांरें हमिमिथ्या
त्वादिगहारे २५ निजगुणकबहूंनहीं मारे सबपरपदार्थ
अपनाये रतिअरतिसुखदुखमें होयकरनिजधर्मविमुख
मैंबुद्धि परचाहिदाहिनितदाहों नहीं शांतसुधाअव
गाहौं पसुनारकनरसुरगतमैं चिरभ्रमतभयोंभ्रमम
तमैं २७ कीं हैबहुजामनमरनां नहीपायेंसांचे
सरनां अबभागउदैमैंपायो तुमदरशनिर्मल
पायों २८ मनशांतभयोंअबमेरो बातैंउअहविभ
वकेरो परविषयरहितआनंद निजरसचाख्योंनिर
दुंद २९ मुजकाजतरेंकारणहो तुमदेवतरनतारनहो
तातेंअबैंयही अबकीजै तुमचरनभक्तिमोहिदीजै ३०

राजैं ॥ तुमरौ जसघोकै मानौं ॥ नयलोकनांथयह जानौं ॥ ९ ॥ ह
रिचंदनसुमनसुहारे ॥ दसदिशिसुगंधमहकाये ॥ अलिपुंज
विगुंजनजौमें ॥ सुमवृष्टिहोनतुमसौमें ॥ १० ॥ भामंडलरवि
मिअयंद ॥ छिपिजातकोटमांनेंदु ॥ जगलोचनकौं
सुषकारि ॥ मिथ्यातमपटलनिहारी ॥ ११ ॥ तुम्हरीदिव्य
धुनिगाजैं ॥ विनइंछ्याभावहनकाजैं ॥ जीवादिकतत्व
प्रकाशी ॥ भ्रमतमहसूर्यकलासी ॥ १२ ॥ इत्यादिविभूति
अनंत ॥ बाहिजअतिशयअरहंत ॥ देषतमनभ्रमतम
भागा ॥ हितअहितज्ञानउरजागा ॥ १३ ॥ तुमसवलायक
उपगारी ॥ मैंदीनदुखीसंसारी ॥ तातेंसुनीयेंयहअरजी ॥ तु
मसरननलीयौंजिनवरजी ॥ १४ ॥ मैंजीवद्रव्यविनअंग ॥

॥ अ० ॥
॥ ५५ ॥
२

इष्टअनुतरा ज्ञानसुद्रिष्ट ॥ त्रैकाल आयपर्जायजानि
हैवीतरागसब भर्म भांन सुद्धातमरस आस्वादले
न ॥ आकुलताबिनसबसुखसमेत ॥ रहिबसमुद्दं
द आमंदमान ॥ लोकाअलोकजानैंप्रमान स्वा
भाविकसंपतिदैंनहार ॥ स्वयमेवकरतजीवनउप
र ॥ प्रभुतुमस्वरूपलखिथिरतधीर ॥ मैंदुखीभयोमोसुनैं
पीर ॥ भरम्यौंअनादिअग्यानधार ॥ सुखमानैंयो
सोऽतिपार ॥ इंद्रीयजनेतसुखगीनहोहि सब
विधिआपनपौंदीयौछोहि ॥ पीअनीअसुनमा
नमिनासुदेखि ॥ अपनैंमानैंकारन विशेष ॥ पर्जा
यवनीअसमानजान ॥ बिनभेदलीहैंयहसवसु

५७
जैन-५८
सं०१२

॥ कोई भोग कौं न चावौ ये भोग बहंवत तौ हैं ॥ टेक

मित्र ना सैं हैं जन ही हैं जी है हैं न की मन ही सैं नैं सेती

सूनी हैं राम न सेवा कुमित्या हैं कोई ॥ १ ॥ वा रीतैं

हिरण हरी आस न तैं मीन मरी याक नौ करि पाप

किरिया पावक यतंज तौ हैं को० ॥ २ ॥ अलि नासिका

के काजैं वसी आकम के माजैं नव हो यगई सौं जैं

नन क्षि लोयि रान द तौ हैं को० ॥ ३ ॥ बुधिजन की सीख

लीजैं शतुरना त्यागि दीजैं जन दीसं तो षकीजैं

इस्मैं तेरा भतौ हैं को० ॥ ४ ॥ इति ॥ रेखि ॥ राग ईमन

जिणचंद्र छवी चिरकाल मनमद्रूहि हूं आ दाह आ ति

सबुजा ग्रां तिसुधाय हू आ ॥ दे० ॥ टेक ॥ आज तु खुदि

मोहि अंतरंग उपजी जु चाह कहीयै तुम जिन निज पीरका
यं सुख लह्यौ स्वसंवेदन जु आप अब देहु मिटै सब मो
ह नाप ॥ दोहा ॥ सब विधि समरथ हौ जु मैं विधि वसि
हौ दीन चरण सरण निज जानि कै उदय करौ स्वाधी
न ॥ इति [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ श्री ॥ श्लोक ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा ता
दृशं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते १
॥ दोहा ॥ दौलत सूरज निभा गसरि उडगण मासिक दास
अव कलि कवि खद्योत सम जहतह करत प्रकास २
॥ श्री रस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री जिनाय नमः ॥
॥ श्री ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥ श्री ॥

ज्ञात हूं कहूं कहा कछु ना वस्याय । विधि निमित पाय सु
थि विसरि जाय । तुम सौं कोंनौं कहीं ऐं सुजांन । जानत
स्वपर परनति प्रमांन । मैं सहै दुःख नेह रौं नाथ । अ
बही की जै तुम चरन साथ । तुम सब लायक ग्यायक जग त
था रत नत्रय संपक दैं न हार । उपगारी तुम बिन ना
हि कोइ । तुम ही सौं इहि विधि होस होइ । मैं विरथ सु
नौं अहै तयेक । अपनैं सम करि तारे अनेक । यह विरथ
धारि मोहि तारि देव । उपगार उचित होइ कौं लेव । हौं ग्या
नानंद स्वरूप धारि । रागादिक मैं हि करौं उधार । मोहि या
हि हीं न कछू जु औरं । मैं चाहतु हौं निज भाव दौर । नहि
मा हौ सन अद्भुत जिरगोक्त । इस्या पूरत नहीं कछू लेल

॥ छ० ॥
॥ पू० ॥

कायजीवनहननतैंसबविधिदरवहिंसाटरी ।रागादिभावनि

वारितैंहिंसानभावितअवतरी ।जिनिकैंनलेशमृषानजलतृ

दी
णहूंविनायौंग्रहैंअठदससहसविधिशीलधरिचिदब्रं

स

ह्ममैंनितरतरहैं ॥२॥ अंतरचतुर्दशभेदबाहिरसंगदसधा

तैंटरैं ।परमादतजिचउकरमहींलखिसमितिईर्यातैंचरैं

जगसुहितकरसबअहितहरश्रुतिसुखदसबसंशयहरैं ॥

भ्रमरोगहरजिनिकैंवचनमुखचंद्रतैंअमृतझरैं ॥ छ्या

लीसदोषविनासुकुलश्रावकतनैंघरअसनकौं लैं

तपबढावनहेतनहींतनपोखतेतजिरसनकौं ।शुचिग्या

नसंयमउपकरणलखिकैंग्रहैंलखिकैंधरैं ॥ निर्जंतु

थाननिविलोकतनमलमूत्रश्लेषमपरिहरैं ॥३॥ सम्यक

तिनिहीं विधि आवत रोके। संवर लहि सुख अवलोके। निज
काल पाय विधि झरनौं। तासौं निज काज न सरनौं। तप करि
ज्यौं कर्म न खपावैं। सोई शिव सुख दरसावैं। किनहूं न करयौ
न धरै को। षट्द्रव्यमई न हरै को। सो लोक मांहि विन स
मता। दुष सहै जीव नित भ्रमता। अंतम ग्रीवक लौं की हद
र। पायौ अनंत विरियां पद। पै सम्यक ज्ञान न लाधौ।
दुर्लभ निज मैं मुनि साधौ। जे भाव मोह तैं न्यारे। दृग ग्या
न व्रतादिक सारे। ते धर्म जबै जीय धारैं। तब ही सुख अ
चल निहारैं। सो धर्म मुनिन करि धरियैं। तिनकी करतूति
उचरियैं। ताकूं सुनि कैं भवि प्रानी। अपनी अनुभूति पि
छानी। इति:॥ अथ छहीढाल॥ गीतिका छंद:॥ ५८

श्री० २ जेही ॥ इषविस ॥ दे ॥ इति ॥ अथ जिनेंद्र पूजक प्रथम

स्तुति: ॥ दोहा ॥ कर्म घाति हरि विश्व के ॥ सकल भा

व जग राय ॥ निज स्वभाव में थिर सदा ॥ जय जय ज

य जिनराय ॥ १ ॥ छंद पद्धडी ॥ जय दोषावरण रहित पु

मान ॥ जय समयसार सर्वगेय ज्ञान ॥ जय जय जिनेंद्र जित

मोह भूप ॥ जय जय शिव रमनीवर अनूप ॥ २ ॥ जय ज

य जिनेंद्र इन मद तम सूर्य ॥ जय जय जिनेंद्र नासे भर

म ॥ जग व्यापी जग भरतार बुद्ध ॥ निज पर न तिमें नि

तरमत सुद्ध ॥ ३ ॥ अरि रज रहस्य हनि कर्म घात ॥ पूज

न पद पायौ जग व्यौं विख्यात ॥ वर अनंत चतुष्ट विर

जमान ॥ दृग बोध वीर्ज सुख वाणि थान ॥ ४ ॥ इत्या

यमेंसमारही ॥ दृगबोधबीजेसनेमई उरमैंधारही ॥ स्वा
वि० टेक ॥ नासाग्रदृष्टिथिरैकौंवाविरागता ॥ सुखवाय
विस्तारिवेकोंचंदहैयही ॥ स्वावि० ॥ १ ॥ वसुद्रव्यभ्यासन
धरैभवनमैंस्वरगरगी ॥ शिवपंथकेउआवनैकौंदी
पिकायही ॥ स्वावि० ॥ २ ॥ स्वविदेषिद्रव्यैकोटिकंद
पेकागया ॥ मिथ्यात्वतमनशावैनेकूंमिचहैसही
स्वावि० ॥ ३ ॥ जाकेसुगुनस्वपजेयजामेंसमारहे नि
जआतमरशोवनेकौंआरसासही ॥ स्वावि० ॥ ४ ॥ ना
गेंद्रसुरनरेंद्रनितगरोंदवीध्यावें ॥ विज्ञानवीतरागता
काहेतुहैयही ॥ स्वावि० ॥ ५ ॥ यहमानिकउरमांहीनि
श्चैहृऊँहैं ॥ भाजभवसिंधुकेनारनकौंजरऊजानैहै

५६० ९९

तरुजार

भवदधितारनविधिअभावनसुखकार ॥ राजिनगुनगायें ॥ धनि: ॥ ५ ॥ इति: ॥ पु

नराग देश ॥ जिनआगममोमनभावैं म्हांनेंमकत नांहि सुहावैं ॥ जिन० टेक स्यादवादपद करि सोभित हैं ॥ नवसंदे इनघावैं ॥ जिन० १ ॥ भूलअनादीतुरत मिटावैं ॥ निजपरतत्व लखावैं ॥ हितअ अहितसुतिनिकारन विचहे यालेयजता वैं ॥ जिन० ॥ २ ॥ संम्यकदरशनज्ञानाचर नमय शिवमारग दरशावैं ॥ जिन० ॥ ३ ॥ याकालमांहि प्रगटमत मान्यो देवसुगुरु

मिथ्यामतिनाशिगई॥ धनि:॥ ३ ॥ स्याद्वाद
मय अतिप्रचंड वर वज्रदंड कस्माहि लीआ
मिथ्यामत भूअंतनतंग ढूंक खिणकमांहि
चकचूर कीया॥ गुणअनंत आपुरव न सकल
कर्मेह निहंसिंनमें वसुमधरा वसीया॥ अ
व्याबाध अखंड अरणकु लंभरे निजा
तमरसरसीया॥ धनि: ४॥ परमेश्रतिद्वीय
अनुपम अंजन रहित निरंजन पद पावे
भाव सहित जाये जे भविजन तिनिके
अघगन विनशावें॥ वहुत भव्यजुत मोमि
कमणवचन गणकरी गणपति सारनारें:

दिअनंतगुनआगरांत।वरनतगनधरनहिलहैं अंत
ताहिजदीमैंकिमआपार।सोनइंदूनमनवहुजीतिधार
पू।जगतमैंसारअरूपअभंग।नविकुमतमतनासन
कौंपतंग।सवसंगविवर्जितनिर्विकार।अविलखत
भूनैनपुहिकिनअपार।६।ओविद्यांत्यागतितत्व
टनपेम।निजअनुभवकौंतुमसुकरजेम।तुमरेपूज
कइंद्रादिदेव।तिनिकौंशिवपददीनौंस्वमेव।७।अ
वलौंतुम्हरौनहींभेदपाय।कुगुरादिकसेवेजीतिताय
विधिफलकरिमैंवहुतैंठगाय।निजभावनभायेसु
खोपाय।८।परमैंआपनयौंकरिसुआय।चिरदुखी
भयौंतहिभवातापा।अवसमयलह्यौविवलनदास

पत्रकेपीछेंदूटिवांचनो

पाय मनशांति भयौ सुख कह्यौ न जाय ॥१०॥ तातैं अब ऐसी करि दयाल मोहि चरणसेव दीजै प्रकार परमैं मेरी परनति न जाय निजमैं निजपरणति थिर रहाय ॥११॥ परविषयरहित आनंदस्वरूप निजमैं निजपरनतिसौं निजरस आस्वाद लह्यौ अनूप दृग ग्यान चरन निश्चयस्वरूप यह वर मोहि दीजै जगतभूप ॥१२॥ सुआस्व हितहेत तुम हौ महांन तुमही भवतारनतरन जांन मो मन उमंगि करि वढी ऐ चाह सो सपद पूरि हो जगतनाह ॥१३॥ दोहा ॥ गुणसमुद्र अवगाहतैं थकित भये गणधार मो शिक लघुमति किमि कहैं भक्तिकरनवाचाल ॥१४॥ चुनि ॥ तुमसुणा

४३

रागजंगलाझीदीदेपूर्बीमें नथा गैडु मल्हार
श्रीमानिनानैं॥वासुधौं॥ सुज्ञानी दारे तजि
कुसंग दुखदाय॥ सुज्ञा०॥ टेक॥ महाकठिनक
रिबडे भाग्यतैं॥ पाईमनुषपरजाय॥ सुज्ञा०१
लोकाचार मांहि अतिचातुर॥ सब लव लकरत
उपाय॥ निजआतमहितमांहि प्रवीति कुगुरुनि
लीयौं भरमांहि॥ सुज्ञा०॥२॥ भवउथाकेकारणहे
जेतेदीनैं छुटकाय॥ जूं जीव के काजवा उलौं
अमृत तजि विषखाय॥ सुज्ञा०॥३॥ सतगुरुप्रगट
जिनागममांही॥ दीनौं भेदवताय॥ तातैं अबमु
नमजिमारिक न्यौं होवैं सुरशिवराय॥ सुज्ञा०
४ इति: पुनहुमरी॥ जिनमतपरवीरे भाई॥ ना
केपरअंत श्रमसिद्धिजाई॥ जि०॥ टेक॥ नयप्रमाण

गेहिभव्यकेहु भयेभ्रचलशिवराय नाकारगसेवतु

सदांषभजीकरौसहाय ३६॥इतिमागिवचनस्कू

नस्कातिसमाप्तां॥ [illegible]

पुनः निजानंदरससौभरीपरपंक

तित्रैरूप दर्शज्ञानचारित्रज्यौमि

न्नाएकचिद्रूप॥१

निक्षेपन्यायकरिपरख्यततत्त्वमनखिजाई॥ विनुपरखैं
जीवादितत्त्वकौंभेदनपरतलखाई॥ तथाग्रंथसिं
धुगहिसगरतवस्कायुजपाई॥ जि०॥१॥ कालदो
षतैंजिनमतमांही॥ नानाभेषबनाई॥ ज्ञानविरा
गरूपजिनमततजि॥ विषयकषायबढाई॥ जि
न०॥२॥ पंचेंद्रीसैंनीआजहैंसोविलईचतुराई
जिनमतपरखनकौंहैमूरिखकरनीसकलगमा
ई॥ जिन०॥३॥ देवधर्मगुरुग्रंथपरखिपुनितजि
प्रमाददुखदाई॥ जिनवचनहृदयमजौंअबमाइक
फेरिनभवभटकाई॥ जिन॥४॥ इति॥

अथ मांगिक चंद्रकृत स्तुति लिख्यते ॥ दोहा ॥ क
र्म घाति हरि विश्व के झलक भाव परगटाय स्वाह
भूति रमनी रमण जयवंतौ जिनराय १ ॥ छंद पद्ध
डी ॥ जय समयसार सब ज्ञेय जान जय दोष आवर्ण
रहित प्रमान जय जय जिनेंद्र जित मोह भूप जय
जय शिवरमनीवर अनूप २ जय जय जिनेंद्र ह
न मदन मल्ल जय जय जिनेंद्र नासे न सल्ल जग
व्यापी जगभर्तौ सुबुद्ध निज पर नितिमें नित रमत शुद्ध
३ अरि रज रहस्य हनि कर्म घात पूजन पद पायौ जं
ग विख्यात वर अनंत चतुष्ट विराजमान दृगबो
ध वीर्ज वर सुख निधान ४ छियालिस अभ्यंतर गुण
अनंत बाहिज बहु सय सोभवंत सिर सत्र फिरत
जय अति उदार सुर चौंवर ढोरत हर्ष धार ५ भामं
डल दिछ विकहीन जाय शत इंद्र नमत नितजी

तिस्याय जयपमौदारअनूपअंग अविभूममनास
नकौंपतंग ६ सवसंगविवर्जितनिर्वैकार सविलखत
नैंनपुलकितअपार लखिशांत्याकृतिठवरठतजेम
निजअनुभवकौंतुमंसुकजेम ७ तुम्हरेपूजकइंद्रा
दिदेव तिनिकौंशिवपददीनौंस्वयमेव अवलौंतु
मरौंनहींभेदपाय कुगुरादिकसेयेतीतिस्याय ८
फैं विधिफलकारीसेवहुतैंठगाय निजभावन
भायौंसुखोपाय परसैंहितअहितसुमानिआप
चिरदुखीभयौंलहिभवातापु ९ अवशामयल
खिवलदरशपाय मनशांतिभयौसुखकह्यौन
जाय तातैंअवजैंसीकहिदयाल मोहिचरण
सेवदीजैंत्रकाल १०॥ परविषयरहितआनदरव

रूप निजातमआस्वादलख्यौअनूप दृगग्यानचारनि
ज्ञयस्वरूप यहवरमोहिदीजैजगतभूप ११ मुजसु
हितहेततुमहौमहांन तुमहींभवतारनतरनजान मो
मनअभिलाषजीसुचाह सोसपदपूरिहोजगतनां
ह १२ ॥दोहा॥ गुणसमुद्रअवगाहकरि थकित
भयेगणधार माणिकलघुमतिकिमिकहैं भ
क्तिकरतवाचाल १३ तुमसुमार्गगहिभव्यवहु
भयेअचलशिवराय सोपथपकडौदासनैं प्रभ
जीकौंसहाय १४ तीनिभुवनकेतिलकवर
सवदेवनिसिरताज पूजतइंद्रनिकरिपूज्यपद ज
यवंतौजिनराज १५ इतिमाणिकचंदकृ
तस्तुतिसंपूर्णं:॥ श्री॥ श्री॥